

सम्पादकीय

आधुनिक इतिहास एटलस अंक को योजना बहुत पहले की गई थी। यही तैयारी के साथ बदलने वाले दशों की वर्तमान स्थिति को समझने के लिये हिन्दी में एक भी पुस्तक न थी। दूसरे देशों की रोजमर्रा की जटिल समस्याओं का समझना अपने देशवासियों के लिये अत्यन्त आवश्यक है। इसीलिये "भूगोल" के पन्द्रहवें वर्ष के उपलक्ष में यह विशेषांक पाठकों की सेवा में भेंट किया जाता है। वैदिक अस्त्रधार पढ़ने वालों और मसार की घटनाओं से रुचि रखने वालों को प्रायः प्रति दिन आधुनिक इतिहास-एटलस की आवश्यकता होगी। इसीलिये इस अंक का पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। प्रत्येक नक्षत्रों के सामने उसका विवरण है। पहले "भूगोल" का गंगा इमी जुलाई में और यह अंक आगामी जनवरी, १९३९ में प्रकाशित करने का विचार था। पर कुछ आकास्मिक कारणों से गंगा अंक तयार न हो सका। अब अंक बदलना पड़ा। अब गंगा आगामी (१९३९) जनवरी में पाठकों की सेवा में भेजा जायगा।

प्रस्तुत अंक बड़ी जल्दी में निकालना पड़ा। इससे तीन नक्षत्रों (पेलेस्टाइन, ईरान-बरमा-स्याम) पुराने देने पड़े। एक दो और छुट्टियाँ रह गईं। फिर भी यदि पाठकों ने इसे पसन्द किया तो प्रतिवर्ष हमको नई आपूर्ति निकाली जा सकेगी। इससे प्रतिवर्ष देशों के प्रधान परिवर्तनों को पाठक एक सामयिक एटलस की सहायता से समझ सकेंगे।

इस अंक की तयारी में महाशय होराधिन की करेन्ट हिस्टरी एटलस और बोमैन की न्यूवर्ल्ड आफ टुडे से बड़ी सहायता मिली। हम दोनों ही मञ्जना के अग्रणी हैं।

विषय-सूची

| विषय | पृष्ठ |
|--|-------|
| १ घर्सेणस की मन्धि | २ ३ |
| २ जमनी की परिचयी सीमा | ४ ५ |
| ३ जमनी के पड़ोसी | ६ ७ |
| ४ जमनी की पूर्वी सीमा | ८ ९ |
| ५ बर्फी लड़ाई में रूस के खोये हुए प्रदेश | १०-११ |
| ६ बाहिटक तट की रिमासतें | १२-१३ |
| ७ पोलैंड की पूर्वी सीमा | १४ १५ |
| ८ यूक्रेन | १६ १७ |
| ९ लड़ाई से आस्ट्रिया हंगारी की हानि | १८ १९ |
| १० आस्ट्रिया | २०-२१ |
| ११ ख्रिष्टिय एण्टेण्ट (छद्म मित्रवत्त) | २२ २३ |
| १२ हंगारी | २४ २५ |
| १३ इटली यूगोस्लैविया और पड़ियाटिक | २६ २७ |
| १४ ख्रिष्टिय एण्टेण्ट—(१) यूगोस्लैविया | २८ २९ |
| १५ यूगोस्लैविया की जातियाँ | ३० ३१ |
| १६ चेकोस्लावैकिया | ३२-३३ |
| १७ रूमानिया | ३४ ३५ |
| १८ बल्गेरिया | ३६-३७ |
| १९ ग्रीस (यूनान) | ३८ ३९ |
| २० पूर्वी और मध्य योरप के अल्पसंख्यक जात | ४० ४१ |
| २१ योरप के नवीन राष्ट्र | ४२ ४३ |
| २२ योरप के भीतरी राज्य | ४४ ४५ |
| २३ आयरलैंड | ४६-४७ |

विषय

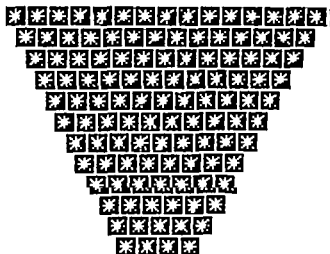
पृष्ठ

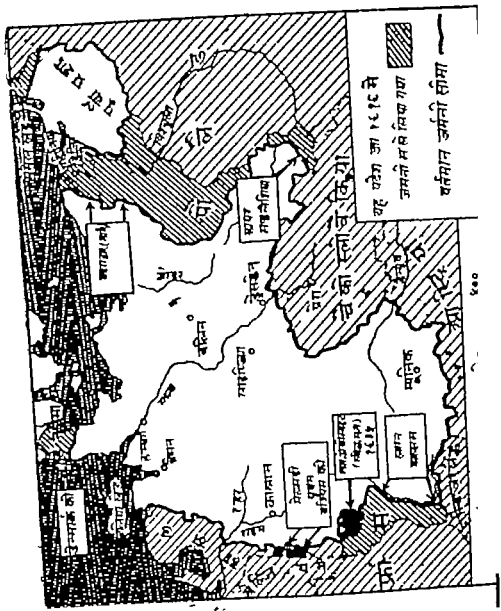
| | |
|--|-------|
| २४ स्पेन की गृह-युद्ध | ४८ ४३ |
| २५ बलिप्रथम की जातियों | ५० ५१ |
| २६ भूमध्य सागर में जातियों का संघर्ष | ५२ ५३ |
| २७ पट्टी लड़ाई से टर्कों का हान्य | ५४-५५ |
| २८ टर्कों | ५६-५७ |
| २९ पूर्वी प्रदेशों में ब्रिटिश साम्राज्य | ५८ ५९ |
| ३० फ्रांस और पेरिसी भूमध्य सागर | ६० ६१ |
| ३१ इटली और लावसागर | ६२ ६३ |
| ३२ एशियाई निया | ६४ ६५ |
| ३३ इजिप्त सऊदी की विजय | ६६ ६७ |
| ३४ इराक का सेल और माग | ६८ ६९ |
| ३५ पेरुवियन में यन्त्रियों के उपमिषेरा | ७०-७१ |
| ३६ ईरान का लक और रेलम | ७२ ७३ |
| ३७ पूर्वी एशिया में शक्तियों का प्रसंग | ७४ ७५ |
| ३८ जापानी साम्राज्य | ७६-७७ |
| ३९ चीन में युयन के माग | ७८ ७९ |
| ४० मंगोल खानों का युद्ध | ८०-८१ |
| ४१ मन्चूरीयों और रूस-जापान | ८२ ८३ |
| ४२ चीन विच्छेद | ८४ ८५ |
| ४३ पारसिकों की सरकार | ८६-८७ |
| ४४ मधीन रूस | ८८-८९ |
| ४५ मधीन रूस के राजनैतिक विभाग | ९० ९१ |
| ४६ पारसीय रूस के राजनैतिक विभाग | ९२ ९३ |
| ४७ काकेशस | ९४ ९५ |
| ४८ पश्चिमी साइबेरिया और तुर्किस्तान | ९६ ९७ |
| ४९ मध्य एशिया की जातियों | ९८ ९९ |

| विषय | पृष्ठ |
|---|---------|
| १० मध्य एशिया की सीमायें और अफगानिस्तान | १०० १०१ |
| ११ रूस का सबसे अधिक पूर्वी प्रदेश | १०२ १०३ |
| १२ सुदूर पूर्वी देशों का खीराहा | १०४ १०५ |
| १३ ब्रिटिश मलय | १०६ १०७ |
| १४ भारतवर्ष-अग्नेयी प्रान्त | १०८ १०९ |
| १५ बर्मा और स्याम | ११० १११ |
| १६ तिब्बत | ११२ ११३ |
| १७ अफ्रीका के स्वाधीन राज्य | ११४ ११५ |
| १८ अफ्रीका में जमनी के खाले हुए प्रदेश | ११६ ११७ |
| १९ अफ्रीका में ब्रिटिश साम्राज्य | ११८ ११९ |
| २० रोडेशिया | १२० १२१ |
| २१ दक्षिणी अफ्रीका के सरक्षित राज्य | १२२ १२३ |
| २२ ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका | १२४ १२५ |
| २३ साइप्रिया | १२६ १२७ |
| २४ संयुक्त राष्ट्र अमरीका में हबिसयों की समस्या | १२८ १२९ |
| २५ संयुक्त राष्ट्र अमरीका और के रीबियन सागर | १३० १३१ |
| २६ क्यूबा | १३२ १३३ |
| २७ पनामा और निकारेगुवा | १३४ १३५ |
| २८ प्रथम महासागर में राष्ट्रों का संघर्ष | १३६ १३७ |
| २९ दक्षिणी अमरीका में संयुक्त राष्ट्र का मात्र प्रयास | १३८-१३९ |
| ३० वेस्टिणिया और परेन्वे की लड़ाई | १४०-१४१ |
| ३१ वेस्टिणिया | १४२ १४३ |
| ३२ दक्षिणी अमरीका की जासियो | १४४ १४५ |
| ३३ न्यूफाउंडलैंड | १४६ १४७ |



आधुनिक इतिहास एटलस



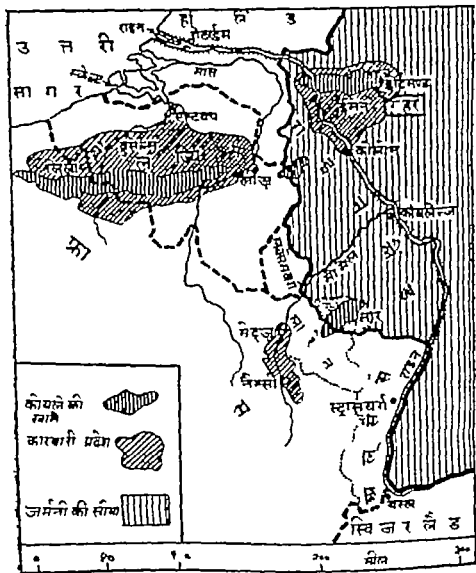


१—वर्सेल्स की सन्धि

थर्की खड़ाई ने योस्य के राजनैतिक नज़रों को एकदम बदल दिया। इतने भारी परिवर्तन यहाँ सदियों में नहीं हुए थे। यहाँ की राजनैतिक सीमायें राष्ट्रपति बिस्सन के मिदान्त के अनुसार राष्ट्रीयता के आधार पर की गई थीं। पर इनसे योस्य का गहरा आधिकारिक धक्का पहुँचा। इस सन्धि के अनुसार परिष्करी सीमा पर अमनी ने यूपम और मस्मेडी वेस्त्रियम को सौंप दिये। अस्सेस खारेम का प्राप्त प्रॉस का मिखा। इससे मिखा हुआ सार वेस्त्रिन पहले खीग के अधिष्ठा में रख दिया गया। पन्द्रह वष के बाद १६३५ में जब लोकमत खिया गया तब ३०० फीसदी खीगों ने अमनी के पक्ष में मत दिया।

उत्तर में स्केन्डिनेविया का कुछ भाग डेन्माक को दिया गया। डेन्माक थर्की खड़ाई में तटस्थ रहा।

पूर्व की ओर ईस्ट प्रशा के उत्तर में मेमलैंड पहले खीग को सौंपा गया। फिर १६२३ में यह लिथुएनिया को दू दिया गया। वेस्ट प्रशा और पोसम से पोर्लैंड बना। अपर साइलेशिया के भाग्य का निर्णय लोकमत से किया गया। साइलेशिया का कुछ भाग चेकास्लोवेकिया को मिखा गया।



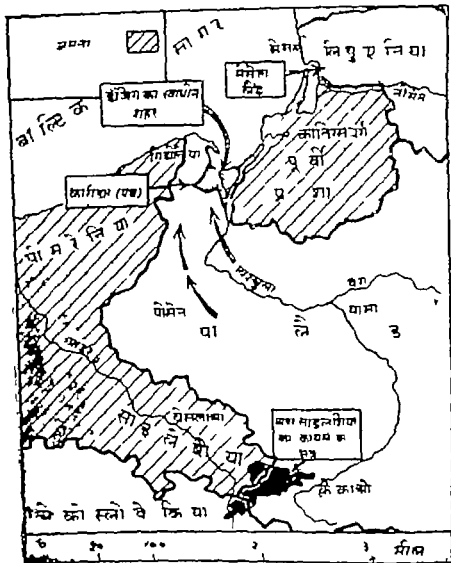
२-जर्मनी की पश्चिमी सीमायें

उत्तरी फ्रॉन्स, थुरिन्गियम, रूहर, मार और नॉरिन के कोपले और लोहे के प्रदेश में राइन और उसकी सहायक मोसेल नदी और यूरा और स्कल्ट नदियां प्राकृतिक अलमार्ग बनाती हैं। यहाँ पर कोई कृत्रिम सीमा नहीं है। रात्र्मतिक सीमायें अगाताग सदियों से यद्वन्तही ही हैं। यान्न शहर से लेकर स्ट्रामपग से कुछ आगे तक राइन नदी लगभग १०० मील तक (बायें किनारे पर) फ्रॉंसीसी नदी हो जाती है। एक आगे ३०० मील तक वह जमन नदी बन जाती है। लेकिन राइन। मुहाना हार्मड में है। राष्ट्रीय सीमाओं को अलग करके यदि इस और अर्थिक सीमायें निर्धारित की जायें तो दूसरे के मन्नाड़े सुलभ सकत हैं।

यसैकम मन्थि के अनुसार फ्रांस और बेसिअियम की सीमा के पास लोरे राइनलैंड में सेना रखन की मनाइ कर दी गई थी। लेकिन १९१९ ई० में जमन फौजें यहाँ आकर डब गईं।

३-जर्मनी के पड़ोसी

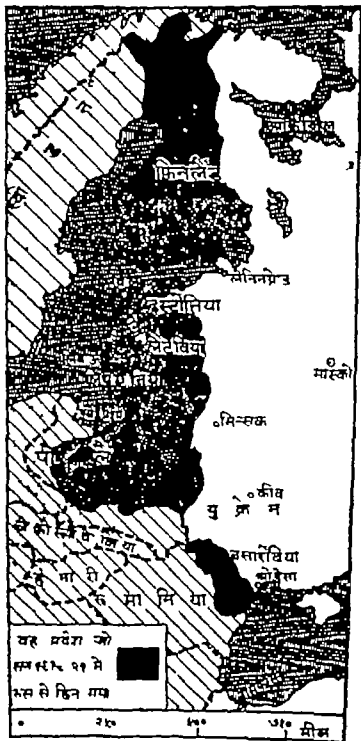
फादरलैंड (पितृभूमि) के मंड के नीचे मध्य योरोप के सब जमन लोगों का इकट्ठा करना जमन नाज़ी लोगों का प्रधान उद्देश्य है । हर द्विद्वार की इस घोषणा से जमनी के कमज़ार पड़ोसी डरने लगें हैं । अल्प संख्या में कुछ जमन लोग इर्मैंड स्विज़रलैंड, फफ़ास्मायकिया, इगारी, रूमानिया, पोर्लैंड और लिथुमनिया में रहते हैं । इनके अतिरिक्त चास्ट्रिया एक जमन राष्ट्र हा गया है । केवल वही के जमन अधिकतर रामन कथाधिक है । इस समय जमनी की विदेशी नीति पश्चिमी सोमा का न छोड़ने की है । लेकिन बेज़िंग, रूमन और पालिश कारीदार का जमन क्षय यथाशीघ्र सुधारना चाहते हैं । नाज़ी मता स्वस से पूरने को भी अक्षय करना चाहते हैं । इस प्रदेश के व पोलिश कारीदार के बन्धु में फादरलैंड को देना चाहते हैं अथवा वही जमनी द्वारा सरचित स्वराज्य स्थापित करना चाहते हैं यह स्पष्ट नहीं है ।



४-जर्मनी की पूर्वी सीमा और पोलिश कारीडार

पोलिश कारीडार २० मील चौड़ी ज़मीन की पट्टी है। पोलैंड का समुद्र तक प्रवेश-भाग दून प लिय यह प्रवेश पट्टी लडाईं के बाद पोलैंड को दे दिया गया। इस पट्टी की प्रधान नदी विश्चुला है। इसका दानों और पोखे लाग बर है। वास्तव में पाल लाग विश्चुला के निकाल स मुठाने तक फैल हुआ है। विश्चुला मय नरह से पोलैंड की नदी है। सकिभ पोलिश कारीडार जमनी के इस्ट (पूर्व) प्रशा का समूच देश से चलन करती है और जमनी के पट स छुरी की तरह मुकी हुआ है। यदि समुद्र तट की एकता रक्ती जाय तो पोलैंड के साथ सम्भाव हाता है और पोलैंड के लाग दो भागों में बट जाते हैं। यदि नदी की एकता रक्ती जाय तो जमन प्रदेश दो भागों में बट जाता है। डैज़िंग बन्दरगाह में जमन लागों की प्रधानता है। बकी लडाईं के बाद सींग (राष्ट्र सघ) की मातहतती में यह एक म्याचीन शहर बना दिया गया। इस समय डैज़िंग का स्थानीय शासन माज़ी ब्रह्म क हाय में है। इस बन्दरगाह से बचने के लिये पोलैंड ने गिडीनिया नाम का अपना एक अलग बन्दरगाह बनाया। गिडीनिया बन्दरगाह का व्यापार आर्थिक तट के दूसरे बन्दरगाहों से कहीं अधिक बढ़ गया है।

जमनी की पूर्वी सीमा के दक्षिणी सिरे पर अपर साइबेरिया की कोयले की लागें हैं। १९२१ के लोकमत के अनुसार इस प्रदेश का सब से अधिक महत्वपूर्ण भाग पोलैंड का मिला गया।



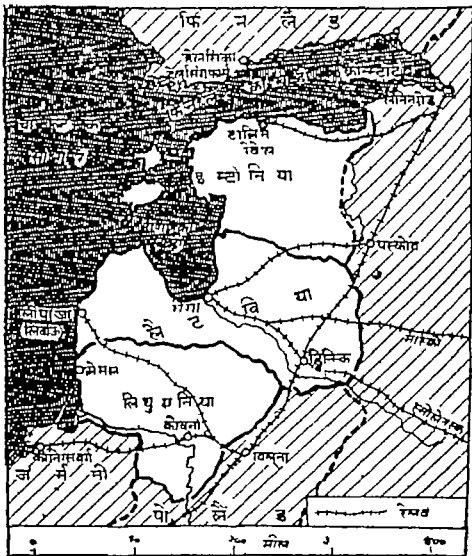
वह प्रवेग जो
 1947 में 1946 से कम था



0 200 400 0 100
 किलोमीटर मील

५—बड़ी बड़ाई में रूस के खोये हुए प्रदेश

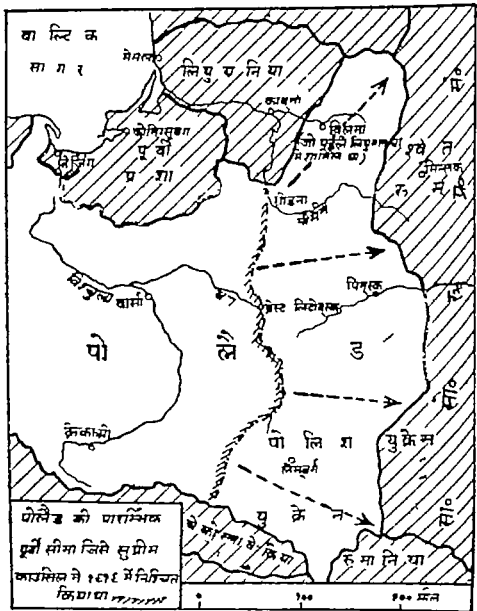
बड़ी बड़ाई में रूस द्वारा नहीं था। लेकिन जब पक्षा क्रान्ति हुई तो उसका मित्र देश रूस से नाराज़ हो गया। वर्मेरस की सन्धि में रूस का कोई प्रतिनिधि नहीं मिला गया। १९१८ में जर्मनी ने रूस के मध्य बस्ट सिराय्स्क की सन्धि उपरबुस्ती मढ़ी थी। इस सन्धि के अनुसार आ राज्य जर्मनी के संरक्षण में बनाय गया था। यह असंग न्यतन्त्र राष्ट्र बना दिये गये। इस प्रकार जर्मिनप्रोड के पदाय का छाड़ कर रूस का समस्त वास्तिक तट छिन गया और फिनलैंड, एस्तोनिया, लैटविया, और लिथुएनिया के न्यतन्त्र राष्ट्र बन गये। भीतर की ओर रूस का बहुत बड़ा भाग पोसैंड का मिला गया। दक्षिण की ओर पमारयिया का प्रान्त रूमालिया न छिन लिया। फिर भी रूस हथियारों के प्रार स इन प्रश्नों पर फिर से अधिकार कर लेने के पक्ष में नहीं है।



६—वाल्डिक तट की रियासतें

१९०२ ई० की रूसी क्रांति के बाद पुस्तानिया, सिवानिया और कारखैंड के रूसी वाल्डिक तट के प्रान्त जार के साम्राज्य में अख्तय होने का प्रयत्न करन छग । रेवन्त, राइगा और लियाउ के प्रसिद्ध बन्दरगाहों का बन्दान के उद्देश्य से जारशाही ने इन प्रान्तों का रूसी बनाने का धार प्रयत्न किया । १९१८ के आरम्भ में इस सारे वाल्डिक प्रदेश पर अमन फौजों का अधिकार हो गया । इसी समय खनिन की साम्यवादी सरकार ने प्रेस्ट लिटोव्स्क की सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिया । बोशोविक शक्ति का घेरने के लिये मित्र दलों ने ब्रम्भ न बनाई हुई नई रियासतों का स्वीकार कर लिया । एस्टोनिया में पर न निया प्रान्त और आघा लिवो निया प्रान्त शामिल हो गया । लिथुएनिया में पूरा कोबनो प्रान्त और विरना प्रान्त का कुछ भाग शामिल है । रेवन्त और रायगा के बन्दरगाहों के द्वारा पश्चिमी रूस के बहुत बड़े भाग का व्यापार हो सकता था ।

सार के चुनाव की विजय से प्रोत्साहित होकर खमनी की नानी सरकार मेमख के फिर वापिस खान का प्रयत्न कर रही है । लिथुएनिया की कचहरी में खमनी में रहने वाले खमनों पर बंध विद्रोह का जो मुकदमा खला उस से खमनी और लिथुएनिया में दुरमनी बढ गई । इसी बीच १९३४ में वाल्डिक तट के तीनों राष्ट्रों ने जनबा की सन्धि पर हस्ताक्षर करके आपस में ऐसी एकता कर ली कि इन सब की विदेश सम्बन्धी नीति एक रहेगी ।



७-पोलैंड की पूर्वी सीमा

वर्सेल्स की सुप्रीम काउंसिल (प्रधान समिति) में पोलैंड की पूर्वी सीमा उस रेखा को बनाया या जा सके बिना एक म उत्तर और दक्षिण की ओर जाती है। पोलिश यूक्रेन पोलैंड के प्रमुख में एक अलग स्वाधीन राज्य बनाया गया। इस मोमा के अन्दर अधिकतर पोलिश लोग रहते थे। १९२० में पोलैंड और रूस की लड़ाई के बाद पोलैंड की पूर्वी सीमा बहुत आगे बढ़ गई। इससे हार्ट (रवेत) रूसी और यूक्रेन निवासी और यहूदी लोग पोलैंड की प्रजा बन गये। पोलैंड के मूलतः राष्ट्रपति विस्नुइस्की के शासन काल में अल्पसंख्यक पोलिश यूक्रेन के लोगों में स्वाधीन हान के दिये क्षीम (राष्ट्र संघ) को अर्थात् दो पर इसका कोई फल न हुआ।

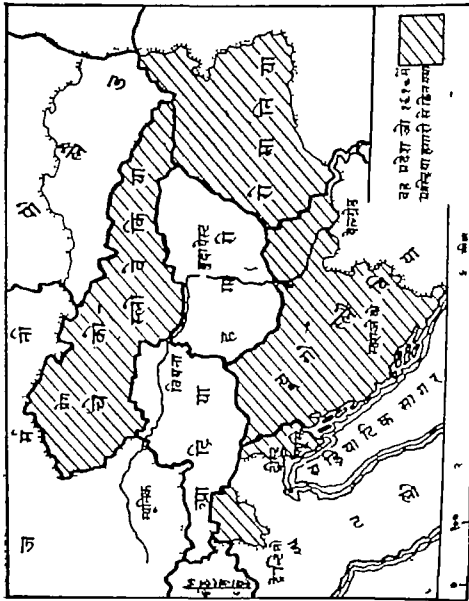
१९२० में पोलैंड की फौज न लिथुएनिया पर हमला किया, और यहाँ की राजधानी विल्ना और नीमन नदी के उत्तर वाले प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार रूस और लिथुएनिया के बीच में पोलैंड का प्रदेश घुस गया। पोलैंड की इस हकंती को लिथुएनिया ने अब तक स्वीकार नहीं किया और नीमन नदी और ममल अन्दरगाह को पोलैंड के व्यापार के लिये बन्द कर दिया। राष्ट्रसंघ (लीग) ने इस मसाले का मुकद्दाम की काफी कोशिश की पर इसमें उसे कोई सफलता नहीं मिली।

८-यूक्रेन

यूक्रेन प्रदेश में यूक्रेनियन (लघुरुसी) या रूथेनियन रहते हैं।

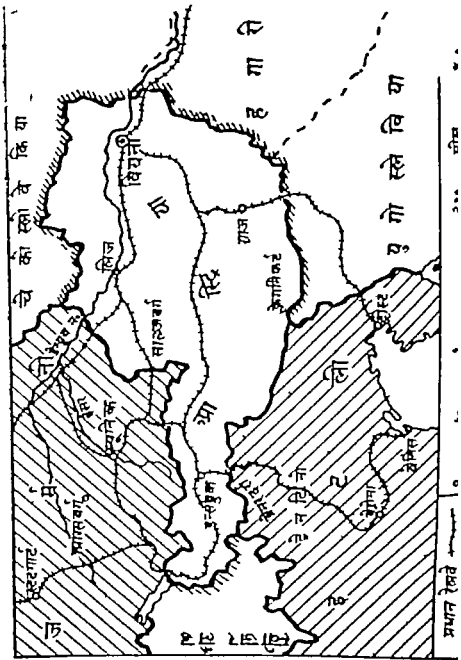
इस प्रदेश की पेट्री योरूपीय रूस के दक्षिणी भाग से आरम्भ होकर पूर्वी पोलैंड, पूर्वी चेकोस्लोवेकिया और रूमानिया (बुकोविना और पलारेयिया) को गूँठी है। १९१८ में अस्ट्रियनरूक की सन्धि के अनुसार रूस का यह प्रदेश स्वाधीन बना दिया गया था। रूसी क्रान्ति के बाद १९१९-२० में सैन्य सेना ने इस प्रदेश को फिर से जीत लिया। १९२३ में यूक्रेन का साम्यवादी साषीट प्रजासत्तय रूस का अंग बन गया।

यह रूस का यथा ही महत्वपूर्ण अंग है। यहाँ की कर्बोज़ाम या कास्पी मिट्टी बड़ी उपजाऊ है। यहाँ डाम्स्क की कोपले की सानें क्रियोई राग की छोड़े की प्रसिद्ध सानें हैं। यहाँ कीव और सारकोव के कारबारो नगर और कास्ने सागर के तट पर बसे जुए ओडेसा, रोस्टोव, मोबोरोसिस्क के व्यापारिक पन्द्रगाह हैं। यूक्रेन का राष्ट्रीय आन्दोलन हम समय पश्चिमी योरप और अमरीका में निर्वासित लोगों तक ही सीमित है।



६-युद्ध में आस्ट्रिया-हंगरी की हानि

१९१८ में यही संधि के बाद त्रय आस्ट्रिया-हंगरी का पुराना राज्य बाँट दिया गया तब पुराने राज्य की लगभग सवा पाँच करोड़ आबादी गति राज्यों में बँट गई। नवीन आस्ट्रिया में केवल ९५ लाख और हंगरी में ८० लाख आबादी रह गई। कॉर्सेवियन पक्ष के उत्तर पश्चिम गैलिसिया प्रान्त पोलैंड का मिल गया। बोहमिया, मारबिया और उत्तरी हंगरी के मिलन से चेकोस्लावकिया का नया राष्ट्र बन गया। पूर्वी हंगरी और ट्रान्सिल्वेनिया का प्रान्त रूमानिया के हाथ लगा। दक्षिणी टायरोल और इटलिया प्रायद्वीप को इटली ने छ ले लिया। क्रोशिया, इरमशिया, बामभिया, हज़ोंगोविना के प्रवेश स्विसिया में मिला दिये गए। इसमें यूगोस्लाविया नाम से सर्ब, क्राट और स्लोवीन लोगों का नया राज्य बना। इस काट-छाँट से आस्ट्रिया और हंगरी के दो छोटे छोटे राज्य समुद्र से दूर पारस के भीतरी भाग में बँह गए। जो डेन्यूब नदी अपने ऊपरी भाग में पुराने बड़े राज्य में ७०० मील का खम्बा जल मार्ग बनाती थी वह अब उत्तरी भाग में चार स्वतन्त्र राज्यों में बाँट बहती है। हाल में आस्ट्रिया का जमनी से निष्का लिया।



चे को स्लो वे कि या

ह गा सी

पु गो स्ले वि या

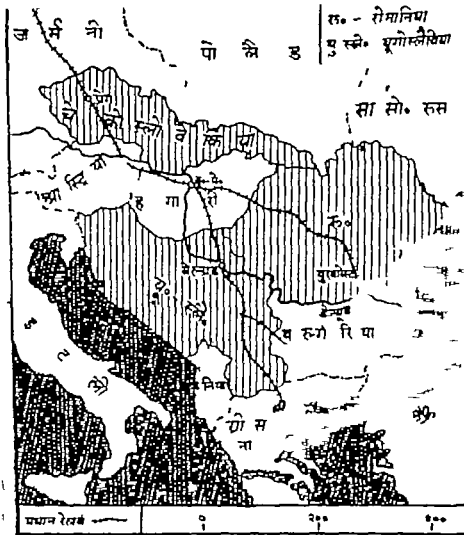
प्रधान रक्षक

३०० सीएम

१०—आस्ट्रिया

नवीन आस्ट्रिया की राजधानी विन्ना में २० ज्ञात्य और शाय
के पहाड़ी भाग में ४२ ज्ञात्य मनुष्य रहते हैं। शहर के नाग
यवादी विध्वर के हैं। देहात क किसान लोग परम्परा प्रेमी रामन
लिक हैं। वैसे देश में प्राय १० फी सदी लोग समन भाषा भाषी
गैर जाति, भाषा और संस्कृति में अपन उत्तरी पहाड़ी जमन लोगों
की भग हैं। बड़ी खड़ाई की काट-छाँट से आस्ट्रिया की आर्थिक
बड़ी शासनीय हा गई। पिछले १२ वर्षों में आस्ट्रिया को
सिया होने से अपने के खिये राष्ट्र संघ (लीग) और दूसरी
गणों की आस्ट्रिया की सहायता करनी पड़ी।

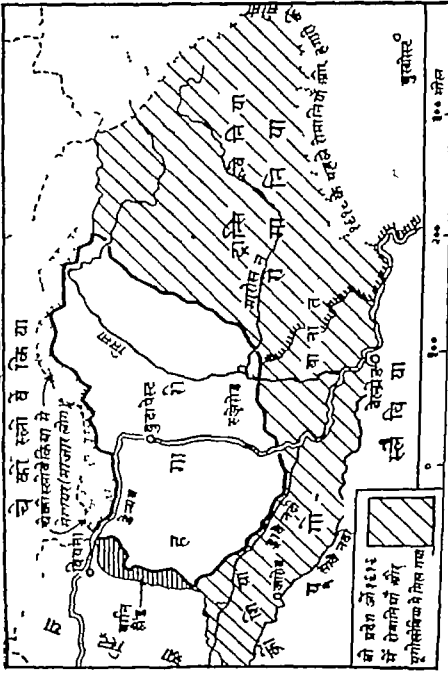
दक्षिण में फेसिस्ट इटली और उत्तर में नाज़ी जर्मनी के बीच में
ट्रिया की भौगोलिक स्थिति कतरे से खाली नहीं थी। पहले
१, फ्रांस और इटली देश आस्ट्रिया की स्वाधीनता कायम रखने के
वचनबद्ध थे। लेकिन गत वर्ष जर्मनी न फौजी प्रवेशन करके विना
समय किये ही आस्ट्रिया को जर्मनी में मिला लिया। इस समय
ट्रिया जर्मनी का ही भग है। स्वाधीन आस्ट्रिया बाहर के मन्त्र से
सक बह गया।




19-लिटिल एण्टेण्ट (लघु मित्रराष्ट्र)

आस्ट्रिया-हंगरी के पुरान राज्य की काट-छांट से चेकोस्लोवैकिया तथा राज्य बन गया और यूगोस्लाविया, पोर्लैंड और रूमानिया के य बड़ गये। इन में चेकोस्लावैकिया, यूगोस्लाविया और रूमानिया में ३० में आपस में एक पसी सन्धि कर ली कि तीनों (सय) की शो भीति एक रहे। बिदेशी मामलों को सय करन के लिय तीनों ने तीन मन्त्रियों की एक समिति नियुक्त की। एक आर्थिक समिति बनाई गई। यह तीनों देशों में रखवे साइनों को मिखामे और युगी एकता रखने का प्रयत्न करेगी। तीनों देश उम सन्धि का दुहराने के में नहीं है जो बड़ी छड़ाई के बाद हुई। व आस्ट्रिया के ईप्सबग राज-का फिर से (हंगरी की) गरी पर बैठान क कट्टर विरोधी हैं। से खमती ने आस्ट्रिया को मिखा लिया तब से यह छोटे-छोट राज्य म नाज़ियों स बबरान खग हैं। उन्हें अपनी राष्ट्रीय स्वाधीनता भारी संकट दिखाई देता है। तीनों डन्यूब नदी के दश है। पर डन्यूब नदी के सगबन्ध में डन्यूब नदी की स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। रूमानिया और यूगोस्लाविया क प्रधान बख और रख-भाग हंगरी में; व ही चेकोस्लोवैकिया का जात है।

चे को स्लो वे क्किया
 येको स्लोवेकिया मे
 नेगपर (माजार लोगर)




 वो प्रदेग ओ १९३८
 में रोकासिया और
 यूगोस्लाविया के मिला गय

१०० मील

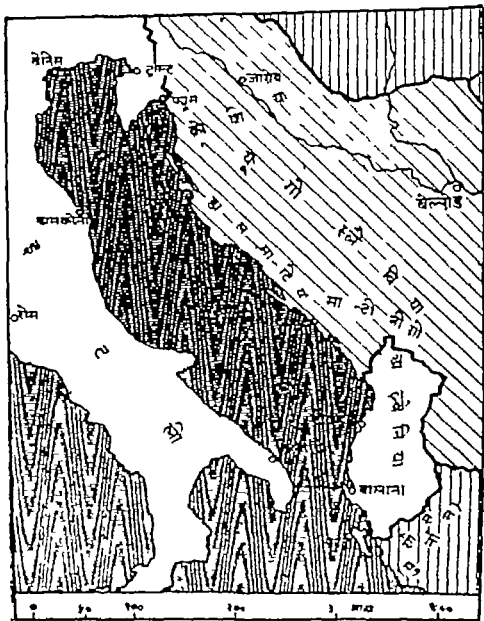
२००

१००

०

१२-हंगारी

पचीस हंगारी एक राज्य है। लेकिन यहाँ कोई राजा नहीं है। जे सिद्दासन खात्री है। एडमिरल होर्शी नाम मात्र के लिये पुवराज काम करते हैं। इय प्रकार हंगारी के जोग प्रगट रूप से १९१३ में मन्त्रि से नाराज़गी जाहिर कर रहे हैं। यहाँ की सरकार में बड़ी खबाई में मन्त्रि की शक्तों की बार बार निन्दा की। समय आने पर वह म का भी प्रयास करेगी। इस सन्धि से जगमग एक तिहाई (मेगायर मात्र) हंगारी देश के बाहर रुमानिया (ट्रान्सिल्वेनिया) वृष्टियो कोस्वोवोफिया और यूगोस्लैविया (धानात) में कर दिये गये हैं। गारी के नेता हंगारी देश की सीमा को इस प्रकार बढ़ाना चाहते हैं 5 यह ठूटे हुए मात्रा जोग फिर से हंगारी देश में आजावे। वे र्मिन्स्वेभिया में स्वाधीन राज्य चाहते हैं। व यह भी चाहते हैं कि गोस्लैविया क फोट, बर्गेनलैंड के आस्ट्रियन और पूर्वी चेकोस्वोवोफिया यून्ट्रियन खेती का राजनीतिक माम्य उनके ही बहुमत से निर्धा त किया जावे।



१३—इटली, यूगोस्लैविया और एड्रियाटिक

इटली देश एड्रियाटिक सागर का अपन अधिकार में रक्षना चाहता है। यूगोस्लैविया धरम मय मिला हुआ इलमशियन तट को सुधारना चाहता है। इसी से इटली और यूगोस्लैविया का विरोध है। १९१९ की सन्धि से इटली का एड्रिया का ड्रीम्ट बन्दरगाह मिला गया। प्रथम बन्दरगाह को उपम जबरदस्ती छीन लिया १९२० की रपाला की सन्धि से इटली का भारा बन्दरगाह और नागास्टा द्वीप मिला गया।

१९१३ में बाएरम युद्ध के बाद अल्पनिया का स्वतन्त्र राज्य इन्हीं नियम बनाया गया कि एड्रिया समुद्र-तट तक न पहुँच सके। अल्पेनिया एक प्रकार से इटली की ही मरकफता में है। १९२६ में तिराना की सन्धि के अनुसार इटली का अल्पनिया में हस्तक्षेप करन का अधिकार मिला गया। इटली के दक्षिणी-पूर्वी सिरे के ठीक सामने घामोना का बन्दरगाह मैनिक दृष्टि से इटली के बड़ करन का है। अल्पेनिया के अधिक सुधार की समा का नियन्त्रण इटली के बँक किया करते हैं। सैनिक सबके यूगोस्लैविया की सीमा तक धन चुकी हैं। एड्रियाटिक सागर में इटली और अल्पनिया का ठीक बही सम्बन्ध है जो फेरिशियन सागर में सयुक्तराष्ट्र अमरीका और स्पूना का है। हाल में इटली और यूगोस्लैविया का सम्बन्ध कुछ सुधार गया है।

१४—लिटिल एरटेण्ट

१ यूगोस्लैविया

यूगोस्लैविया के नये राज्य के बन जान से सर्बिया का पुराना स्वतंत्र पुरा जा गया। सर्बिया की बड़ी इच्छा थी कि यह पेट्रियारिक सागर तक पहुँच सके। लेकिन इससे यूगोस्लैविया को कठिमाइयाँ कूर नहीं हुई हैं। यूगोस्लैविया का पश्चिमी भाग पहाड़ी है। इसलिये इस पार समुद्र तक पहुँचने में बड़ी बाधा है। देश का पार करके समुद्र-तट तक केवल दो प्रधान रेलवे लाइने पहुँचती हैं। उत्तरी शाखा का अन्तिम स्टेशन प्यूम है जो इटली के अधिकार में है। यूगोस्लैव खाँगों का प्यूम का बाहरी मुहल्ला सूसक मिला है। दक्षिणी रेलवे शाखा टिप्रट (ट्रिप्ट) में पहुँचती है। देश की प्रधान नदी डम्प्य और इसकी सहायक ड्रावे और मोरावा नदियाँ पेट्रियारिक सागर से कूर पूर्व की पार बहती हैं। डीन घाटी दक्षिणी और मध्य भाग का पार करके अल्पनिया में होकर बहती है। इटली के विरोध से यह भाग बन्द सा ही है। कार्दर घाटी दक्षिण की पार इजिप्ट सागर के लिये नाग बनाती है। इधर यूनानी खाँगों का (सेलोनिका पर अधिकार होने से) घोर विरोध होता है।

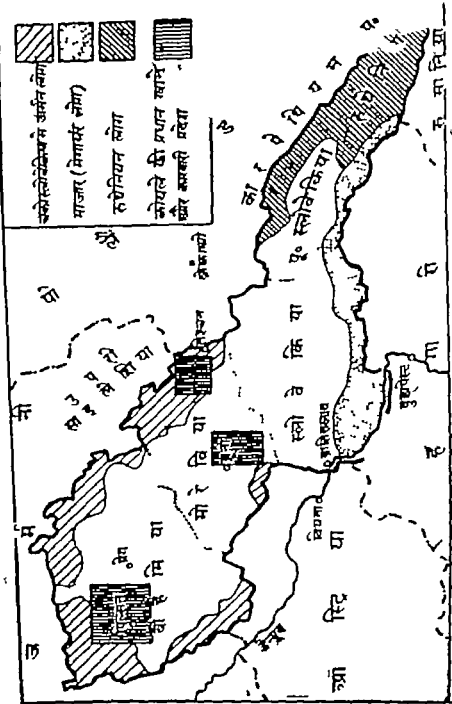
१५-यूगोस्लैविया की जातियाँ

यूगोस्लैविया मयं, बोट और स्लावोन लोगों का राज्य है पुरानी सर्बिया क बहुत कुछ बढ़ जाने से यह राज्य बना है। १९१२-१३ के पारकन युद्ध के बाद सर्बिया का प्रदेश दक्षिण में पाइर और घाटी की ओर काफी बढ़ गया। १९१६ में यही लड़ाई के बाद आस्ट्रिया हंगरी के रत्नोवामिक प्रांत (क्राशिया, स्लैवामिया थाममिया, हार्जी गाथिया और और मारुटीनीप्रो का छोटा राज्य सर्बिया में मिला दिया गया। इन सब के मिलने से यूगोस्लैविया का राज्य बना है। सब लोग इन नये प्रांतों का अपने अधिकार में समझन लगे हैं। सब लोगों से अधिक समय और कारवारी काट लोग इसका विरोध करत हैं और अपने शिषे स्वाधीनता चाहते हैं। अट लोग केपलिक हैं। सब लोग आर्थोडॉक्स चर्च के हैंसाई हैं।

देश के मोतरी विग्रह को सुसम्मान के शिषे सर्बिया के राजा प्लेगोर्जोडर ने नये ढंग की लोकमतसत्ता स्थापित की। इसके अनुसार देश में एक ही राष्ट्रीय दल का समाज दिया गया। यह स्वयं डिप्टेयर या तामानाह बन गया। लेकिन उमकी हत्या कर शासी गई। राजा के मारे जाने के बाद देश के सामने नई समस्या उपस्थित हुई। युकराज की सभा सर्बिया की एकता भी रक्षना चाहती है। इसके साम ही मोशिपन लोगों की लोगों का पूरा करना भी जरूरी है।



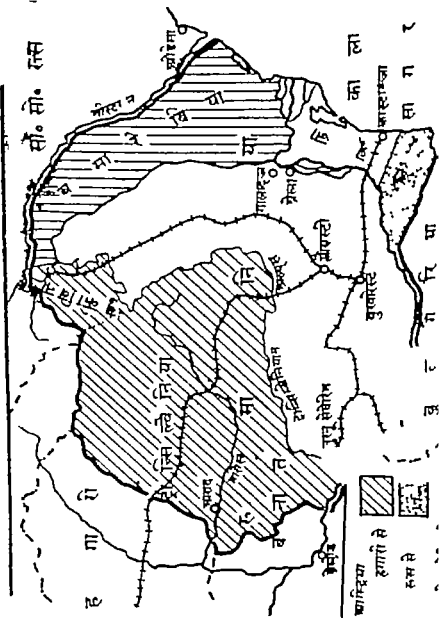
अमेरिकेकेंद्रियमं अर्धन लोग
 याजार (मिगाधर लोग)
 रुचेनियन लोग
 नोयले की प्रधान खाने
 धूमर अरकरी प्रवेया



१६-लिटिल एगटेण्ट चेकोस्लोवेकिया

लिटिल एगटेण्ट के तीन देशों में चेकोस्लोवेकिया सबसे अधिक बारी है। स्वाधीनता के भाव भी यहाँ के लोगों में अधिक हैं। बड़ी हुई के बाद आस्ट्रिया-हंगरी के राज्य के बड़े भाग के अलग होने से प्रायः चेकोस्लोवेकिया देश बना है। केवल उत्तर में जर्मनी से रसाइबेरिया का छोटा ज़िन्ना अलग करके चेकोस्लोवेकिया में आया गया है। इसी में बोहेमिया का बना बसा हुआ प्रान्त शामिल है। चेकोस्लोवेकिया में लगभग ७० फ्रीसदी लोग चेक और स्लोवैक, फ्रीसदी जर्मन हैं। १९३२ के चुनाव में यहाँ के नाजीदल को अपूर्ण ज़रता मिली है। दस फी सदी मेगायर और रूमेनियन हैं। रूमेनियन न चेकोस्लोवेकिया के एकदम सिरे पर स्थित है। इसमें न चेक स्लोवैक लोग रहते हैं। इसमें पुरानी हंगरी के प्रायः बड़े बड़े गिरदार मेगायर लोग रहते हैं। इस प्रान्त का केवल स्मानिया ने टूट मार्ग सम्बन्धी सम्बन्ध स्थापित करने के लिये हंगरी से जुग : मिखाया गया था। इससे मेगायर जनता और चेकोस्लाविक सरकार में मित्रता रहती है। मेगायर किलानों का रहन सहन भी देश के न कारबारी लोगों से एकदम मित्र है।

सौ. सो. रत्स



ब्रान्द्रिया
 हगागी से
 रत्स से

१७—लिटिल एण्टेण्ट रूमानिया

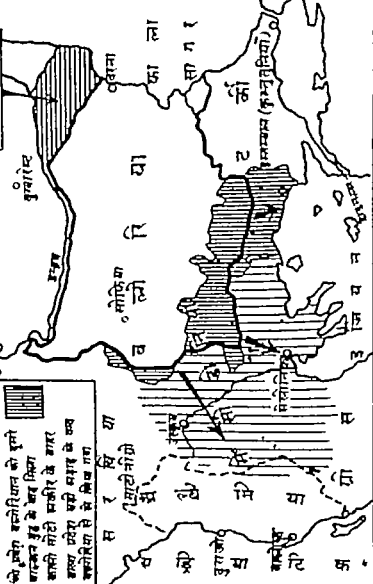
यही लड़ाई के बाद रूमानिया देश पहल से दुगम स भी अधिक था है। इसी लिये रूमानिया यही लड़ाई से सम्बन्ध रखने वाली गों का दुहरान (सुधारम) के लिये तैयार नहीं है। यह प्रायः र देश है। कई नय भागों के मिल जाने स रूमानिया में कई गों का जखट हो गया है। रूमानियन जागों क अतिरिक्त यहाँ १ ठाई खाल यूक्रेनियन, ठाई खाल जर्मन और पहूवी और वन मेगायर (माजार) दो खाल बल्गेरियन और दो खाल तुर्की और र रहते हैं।

क्रेनियन लोग बसारबिया प्रान्त में रहते हैं। इस प्रान्त को रंया ने क्रान्ति के समय १९१९ ई० में रूस से छीन लिया था। ाना प्रान्त पहल आस्ट्रिया के सम्राट की सम्पत्ति थी। माजार लोग तर ट्रान्सिल्वानिया, और वागात में रहते हैं। डामूजा प्रान्त का े भाग १९१३ ई० में दूसरे बाएरुन युद्ध के बाद रूमानिया न या स छीन लिया था। जाज़ी कारनामों स रूमानिया में फिर प्रम उठ लड़ा हुआ है।

रूमानिया का प्रधान निवास गेहूँ और मिट्टी का लेख है। मिट्टी के िकरणे अधिकतर ट्रान्सिल्वानियन अरण्य के दक्षिणी ढालों पर तात है।

प्रथम आन्ध्र प्रदेश के खद
 बल्लारिण ने किस प्रदेश को
 सिंधु के प्रदेश का जिक्र
 ओ प्रदेश बल्लारिण को इलो
 आन्ध्र प्रदेश के खद सिंधु
 आन्धी सौदी सकीर के आर
 आन्धी प्रदेश की सभार के खद
 बल्लारिण से के सिंधु गण

आन्ध्र प्रदेश के
 आन्धी सौदी सकीर के

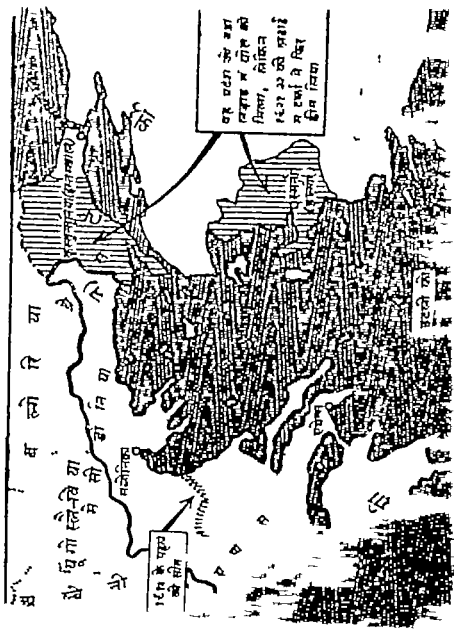


१८—बल्गेरिया

यूगोस्लाविया का अक्सर बाल्कन प्रदेश का हंगरी कहते हैं। हंगरी तरह बल्गेरिया भी १९१८ की सन्धि से असन्तुष्ट है। वह इसका शीघ्र बहालपान चाहता है। इससे पहले १९१३ ई० की सन्धि भी उस घोर असन्ताप है। १९१२ में बल्गेरिया अपने सब पड़ोसियों अधिक बलवान था। १९१३ ई० में जब उसने अपने पड़ोसियों से मिलकर टर्की का हराया तो उस कोई विरोध लाभ न हुआ। १३ में सर्बिया न रोसीडोनिया और ग्रीस (यूनान) ने सेरबोनिकर किया। रूमानिया ने उत्तर की ओर दक्षिणी बोस्निया प्रदेश को लिया। रोसीडोनिया को ईजिप्टन सागर के किनारे का कुछ भाग मिला। वह १९१८ में उस से लीन किया गया।

यूगोस्लाविया में स्थायी शान्ति रखना ही बल्गेरिया की विदेशी ने मालूम होती है। क्लिन ड्रांग नाम कास्टन (नाज़ी) जर्मनी तर से शान्ति दोनों देशों में कुछ मित्र भाव हा जाव।

रूमानिया का तरह बल्गेरिया के साथ भी अधिकतर किसान। व अपनी सरकार से बहुत ही असन्तुष्ट है। उनको दवान के ये तरह-तरह के कानून बन। हाल में फौजी अफसरों और राजा रूस के बीच में जो दाँव पेंच बखे उससे सन्तुष्ट है कि नया शासन-कार अधिक सन्तोष जनक हो।



यह प्रदेश जो बड़ा
 लकड़ा में घोल को
 मिला, लेकिन
 1957 में उसे लडाख
 में दर्ज में फिर
 हीम निषा

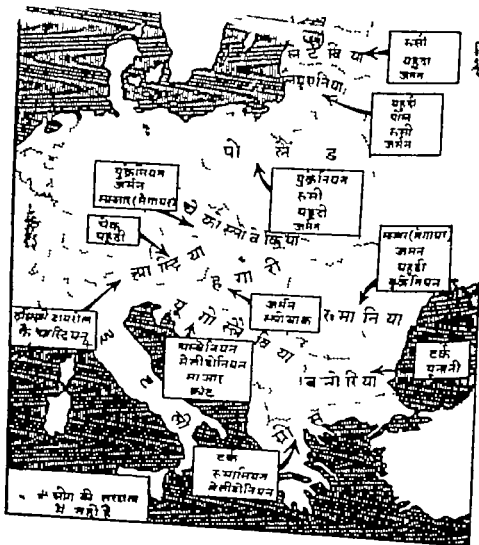
1957 के पहले
 के सीम

मज्जेनिम्ब
 पूरुबो स्लैन्डि या
 मे सी

उदली को

१६-ग्रीस (यूनान)

ग्रीस देश में अधिक तर इंडियन सागर का मट ग्रीस कुछ द्वीप मिलते हैं। १९१२-१३ के वास्तव्य युद्ध के बाद ग्रीस का कुछ उत्तरी तट और मेलेनिका मिल गया। पड़ी नदी के बाद मित्र राष्ट्रों की से पूर्वी घेस दीन कर स्मर्ना (कुम्मुन्नुनिया क पाम तक) और कई द्वीप देकर ग्रीस की सीमा का बहुत कुछ बढ़ा दिया। लेकिन १९२१-२२ में टर्की ने गुरो तरफ हारन क बाद स्मर्ना और पूर्वी घेस खला गया। हाल में ग्रीस और टर्की में मित्रता हो गई। सींग (राष्ट्र-सभ) की अधिक सहायता म ग्रीस में बसे हुए टक टर्की में पहुँचा दिये गये और टर्की में बसे हुए यूनानी ग्रीस भेज दिये गये। १९३३ में ग्रीस और टर्की में मित्रता सम्बन्धी सन्धि हा गई। इस म दोनों न आपस की सीमा को सुरक्षित रखन और अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर एक मत रखने का निश्चय कर लिया। अब से इरली न होउकनीत द्वीप समूह और र्होड द्वीप पर अधिकार कर लिया और यहाँ अपना फौजी अड्डा बनाया है तब में ग्रीस की राष्ट्रीय भावनायें कुछ विफल भी हो गई हैं। माइसम द्वीप पर लगातार ब्रिटिश अधिकार भी यूनानी राष्ट्रीय सम्मान को बचा पहुँचाता है।

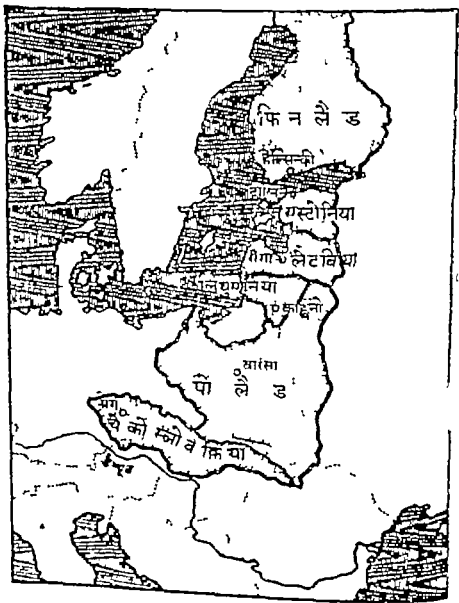


२०-पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प-संख्यक जातियां

बड़ी सद्दाइ और उसक बाद होन वाली सन्धि के अनुसार पूर्वी और मध्य योरुप मजा जातियो अल्प संख्या में थीं प्रायः उन सबन अलग लग राष्ट्र बना लिथ । इनक यहां जो अल्प संख्या में जाग बच उनके त्यों की रक्षा का भार लीग (राष्ट्र सघ) न अपना ऊपर छ लिया । रोड, चेकास्तापेकिया, यूगास्लेविया, रुमानिया और ग्रीस की सीमायें ल से काफी अधिक बढ़ गई । अल्प संख्या के लोग लीग की क्वार्टरलि सलमन शिकायत पत्र कर सकते हैं । लेकिन लीग की प्रथा पसी नी है कि इसमें बहुत कुछ वेरी हाने का डर रहता है । लीग ने अल्प : किसी अल्प संख्या का पक्ष लेकर किसी राष्ट्र के शासन प्रबन्ध में रूचें नहीं किया है । पोलिश यूक्रेन न अपना स्वराज्य स्थापित करने लिय लीग का कई बार अपील की । लेकिन कोई फल न हुआ । यूक्रेनियन रोड और रुमानिया क रूमेनियन भी शामिल हैं ।

२०-पूर्वी और मध्य योरुप में अल्प- संख्यक जातियां

पची सत्ताई और उसके बाद होने वाली मन्त्रि के अनुसार पूर्वी और मध्य योरुप में जा जातियाँ अल्प संख्या में थी प्रायः उन समय ने अलग अलग राष्ट्र बना लिया । इनके यहाँ जा अल्प संख्या में जाग बच उनके स्वयों की रक्षा का भार खीग (राष्ट्र सम) ने अपने ऊपर ल लिया । पोलैंड, चेकोस्लावेकिया, यूगोस्लाविया, रूमानिया और ग्रीस की सीमायें पहल से काफी अधिक बढ़ गई । अल्प संख्या के लोग खीग की काठसिल के मामल शिकायत पश कर सकत हैं । खेकिल खीग की प्रथा पंसी गीकी है कि इसमें बहुत कुछ वेरी होने का डर रहता है । खीग ने अथ तक किसी अल्प संख्या का पच लेकर किसी राष्ट्र के शासन प्रबंध में हस्तक्षेप नहीं किया है । पोखिश यूक्रेन न अपना स्वराज्य स्थापित करने के लिये खीग को कई बार अर्जी दी । लकिन कोई फल न हुआ । यूक्रेनियन में पोलैंड और रूमानिया के स्थेनियन भी शामिल हैं ।



फिनलैंड

डेन्मार्क

स्वीडन

एस्टोनिया

लैटविया

लिथुआनिया

पोलैंड

सांसो

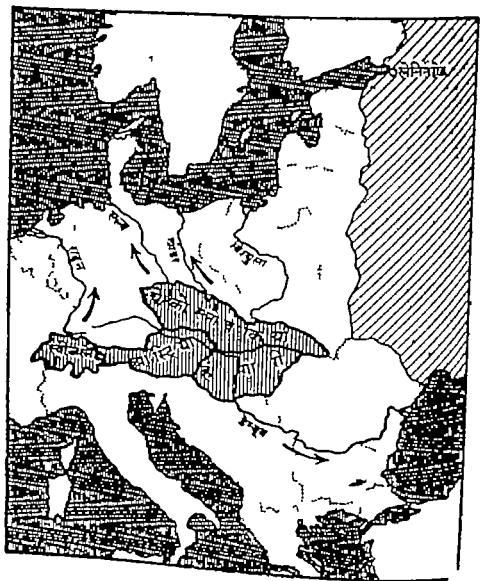
पोल्यांड

स्लोव्हाकिया

मॉल्डोवा

२१-योरुप के नये राष्ट्र

यही सन् १९१९ के यान् योरुप की राजनैतिक सीमाओं में चार परिवर्तन आ गये। १९१९ में चार नये और स्वाधीन राष्ट्र बन गये। इन नये राष्ट्रों के बनान में ऊपर से राष्ठीयता के सिद्धान्त का पालन दिल्नाया गया। ऐसा करना निस राष्ट्रों के निस सुविधा जनक था। नये चार राष्ट्रों में चार राष्ट्र एकदम स्वयं के प्रदेश को अलग कर के बनाये गये। पोलैंड राष्ट्र अर्थात् पोलैंड का किर से यमान में भी स्वयं का बहुत बड़ा भाग अलग किया गया। अकारलावेकिया प्रायः पुराने आस्ट्रिया-हंगरी के साम्राज्य के हिस्सा निस हान में बना है। प्रथम पांचराष्ट्रों का समुद्र तक पहुँचना सुगम है। पोलैंड को समुद्र तक पहुँचने के लिये भूगर्भ के लिये समन के प्रदेश का दो भागों में बाँट कर पाकिश कारीदर बनाया गया। डेन्मार्क समुद्रगाह में समनों की अधिकता और बहिष्कार से यचन के लिये पोलैंड की सरकार ने मिनीनिया नाम का एक नया समुद्रगाह बनाया। अकारलावेकिया चारों ओर से स्पष्ट से घिरा हुआ है। बिदेशी समुद्र-तटों तक पहुँचने के लिये इसे नदियों की सहायता लानी पड़ती है।



२२—योरुप के भीतरी राज्य

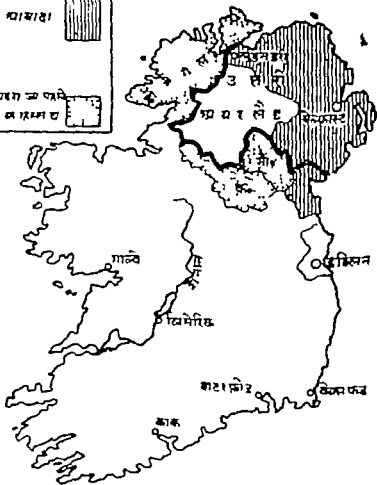
बर्षी सडाई के पहले मास में स्विजरलैंड और सधिया ही दा
पूसे भीतरी देश थे जो किसी समुद्र का नहीं छूते थे। बर्षी सडाई के
बाद आस्ट्रिया हंगरी और चेकोस्लोव्किया तीन और घंश भीतर डाल
दिये गये। वे किसी समुद्र को नहा छूते हैं। रूस का समुद्र तट भी
बहुत कम हो गया। फिनलैंड की प्लादी के पास वाले तट को छोड़कर
शेष तट रूस के हाथ से जाता रहा।

हर किसी राज्य के लिये जलमार्गों का होना आवश्यक है। कुछ
नदियों को अन्तर्राष्ट्रीय महत्व मिलगया। राइन पृथ्व और आडर इनमें
प्रधान हैं। यह तीनों जर्मनी की प्रधान रूप से जर्मनी की नदियां हैं।
रेन्यूब नदी जर्मनी के पश्चिम में निकलती है। लेकिन यह जर्मनी के
पश्चिम वाले देशों के लिये जल-मार्ग बनाती है। इन सब नदियों पर
कुछ न कुछ अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण है। इस प्रकार स्विजरलैंड को राइन
में चेकोस्लोव्किया को पृथ्व और आडर में अपने स्टीमर चलान का
अधिकार मिल गया है। इससे चेकोस्लोव्किया के बाहरी व्यापार का
प्रधान बन्दरगाह हेम्बर्ग है जो जर्मनी में पृथ्व के मुहाने के पास स्थित है।
रेन्यूब नदी का नियन्त्रण एक कमीशन के हाथ में है। इस कमीशन के
सदस्य चार हैं। इनमें बाव्हेन प्रदेश के केवल स्मानिया देश का प्रति
निधि इसमें शामिल है। शेष तीन प्रिटेन, फ्रैंक, और इटली के हैं।
बाव्हेन प्रदेश के नहीं है। इस तरह बाहर की बर्षी शक्तियों को बाव्हेन
प्रदेश के मलाहों में हस्तक्षेप करने का मौक़ा मिलता रहता है।

सघन वनवासी



सीमा पारगम्यता
अवरोधक क्षेत्र



0

50

1

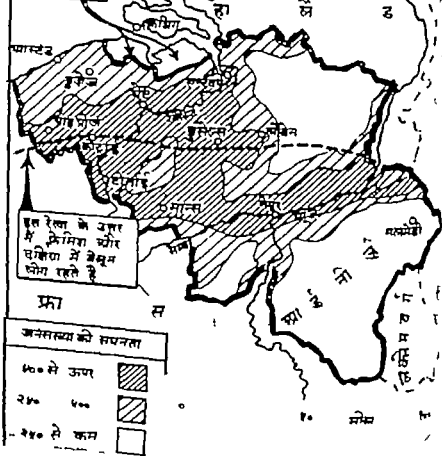
मील

200

२४—स्पेन का विच्छेद

आइबेरिया प्रायद्वीप का सब से बड़ा भाग स्पेन है। स्पेन में नदियों पाटिय और पठारों के बीच में पहाड़ खड़े हुये हैं और देश की एकता प्राकृतिक बाधा चाहते हैं। राजा के चले आने के बाद देश में जो तन्त्र राज्य स्थापित हुआ उसे प्रबल होने का पूरा अवसर न मिला। उत्तर में वास्क और पूव की ओर भूमध्य सागर के पास रहने के कारण लोग स्वाधीन होने का प्रयत्न करने लगे। नया प्रजातन्त्र साधारण और किसानों के आर्थिक कष्टों का कुछ भी दूर नहीं कर सका कि हस्तों में बड़े बड़े जागीरदारों, पादरियों और सेनापतियों ने कर अनरक्ष प्रकोपी अप्यक्षता में विद्रोह का भंडा उठाया। मरकसे यत स्पेन के मूर सिपाही विद्रोहियों का साथ देने के लिये बुलाये। विद्रोहियों को छिपे छिपे इटली जर्मनी, और पुर्तगाल से मदद मिलने लगी। स्पेन की सरकार को रूस और फ्रान्स से सहायता मिलती है। से स्पेन की गृह-कलह अन्तर्राष्ट्रीय खड़ाई का रूप धारण करती गी है।

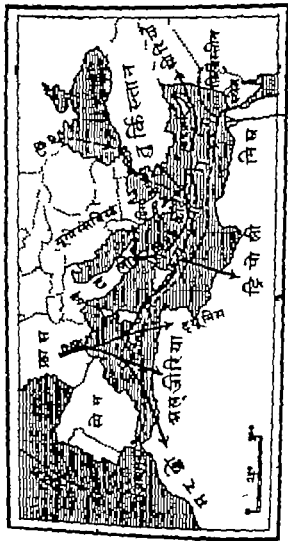
इकल्ल का बाँध
किनारा हुए



२५—ब्रेलिजियम की जातियाँ

ब्रेलिजियम के दक्षिणी पश्चिमी भाग में रहने वाले वालून लोग फ्रेंच भाषा में हैं। उत्तरी भाग में रहने वाले प्रसमिश लोग डच लोगों से मिलते हैं। अमन भाषा बोलते हैं। भाषा की लड़ाई एक बार लड़ी कि लड़ी लड़ाई के समय में प्रसमिश लोगों ने जर्मनी की भाषा में एक अलग स्वाधीन राज्य स्थापित करने की कोशिश की। लड़ाई के बाद वालून लोगों ने प्रसमिश लोगों की इन हरकतों का ही ठहरावा और कुछ लोगों का देश देने का निरवय किया गया। लड़ा कोलाहल मचा। लेकिन पश्चिमि लोगों की भाषा का राज्य में स्थान मिल गया और घन्ट विरवविद्यालय में प्रसमिश भाषा पढ़ाता जा गई।

क्यूट नदी के बायें किनारे के समथप में हासैड और ब्रेलिजियम के लड़ा लड़ा चल रहा है। इस समय क्यूट नदी के दोनों किनारे डच के अधिकार में हैं। एक्टवप बन्दरगाह का सुरक्षित रखने के लिये लड़ा लोग बायें किनारे पर अपना अधिकार चाहते हैं।



१६—भूमध्यसागर में जातियों का संघर्ष

प्राचीन रोमन काल में भूमध्यसागर पहले पहल प्रसिद्ध हो गया । रोमन शक्तिपूर्वक अफ्रीका में घुसने लगीं तब भूमध्यसागर का स्वरूप भी अधिक बढ़ गया । स्पेन नहर के खुल जाने से भूमध्यसागर पहले से अधिक महत्वपूर्ण बन गया । यहाँ कई जातियों के लोगों का सघर्ष होता है । फ्रांस के लिये फ्रांस से उत्तरी अफ्रीका को जाने वाला मार्ग बड़े काम के है । इटली भूमध्यसागर को एक रोमन जल समन्वय है । इटली से ट्रिपली और आलसागर पर बसे हुए लिवन उपनिवेशों और एथीसीनिया के भाग सम्बन्धित हैं । एथीसीनिया के भाग पर इटली का प्रायः निरंकुश अधिकार है । पश्चिम से पूर्व (भारतवर्ष) को जाने वाला समुद्री मार्ग अत्यन्त कम जीवन भरण प्रदान करता है । जिब्राल्टर, मारस, स्त्रास और स्पेन इस जलमार्ग की कुंजी हैं । ग्रीस (यूनान) को यह सख्त नहीं है कि राष्ट्रीय और टेकेनीक शक्तियों पर इटली का अधिकार जमा रहे । रूस के दक्षिणी तट जलमार्ग बाल्कन और डार्डेनेलस जलसंयामकों में होकर पूर्वी भूमध्यसागर में पहुँचता है । इसलिये रूस चाहता है कि भूमध्यसागर किसी एक जाति का विशेष रूप से प्रमुख न होने पावे ।

७-पिछली लड़ाइयों में टर्की का हास

एक युद्ध के बाद में स्वीय जातियों के ऊपर से टर्की का राज्य रहा। यही लड़ाई ने अरब, मिरिया, पेसस्टाइन और इराक के को भी टर्की शासन से मुक्त कर दिया। मिस्र देश से टर्की का यही लड़ाई के आरम्भ में ही जाता रहा था। इस समय टर्की में ने प्रधानता है। केवल दक्षिण और फरात नदियों के विकास के [र्द शोग कुछ अल्प संख्या में रहते हैं। यही लड़ाई के बाद। पर फ्रांस का मेंडेट हा गया। पेसस्टायन, ट्रान्स जाइन और इराक देश मेंडेट हा गया। पीछे में इराक प्रायः स्वाधीन हो गया। देश में मिस्रराष्ट्रों ने अपने अपने पिछू कड़े स्वरदार और अमीर र दिये। अधिक दक्षिण की आर इन्सुलद ने यहुतों को जीत लेखा) किया।

ही लड़ाई के बाद बास्फोरस और डाइनेबप के जलसंयोजकों के। किन्नेयन्नी इटा ली गई थी। सेप्टेम्बर १९२१ में इस प्रदेश पर किर अपना पूरा अधिकार कर लिया।

३ - - -

२८—टर्की

पों दम वर्ष में चार विकराल खड़ाइयाँ खड़ीं पड़ीं ।

२ में ट्रिपली में इटली स तथा १६१२ में बाएरुन युद्ध हुआ ।

१४१८ क पोप्याय युद्ध में टर्की न जमनी का साथ दिया ।

२१ २२ में ग्रीस स टर्की का चार युद्ध करना पड़ा । इसके बाद

हा कमानस पाशा की अघ्यवृत्ता में टर्की का दश शक्ति की भार

र लगा । टर्की का राज्य बाएरुन में कुस्तमुनिया और उसके पड़ान तक

सीमित रह गया । एशिया में अनातोलिया का विशाल पठार है ।

खपाशा ने देश को उठान के लिये रेल, सड़क और अरवार की ओर

का पूरा जोर लगा दिया । अनातोलिया पठार क भार पार जाने

की एक नयी रेल की याजना हो रही है जो काळा सागर पर बसे हुए

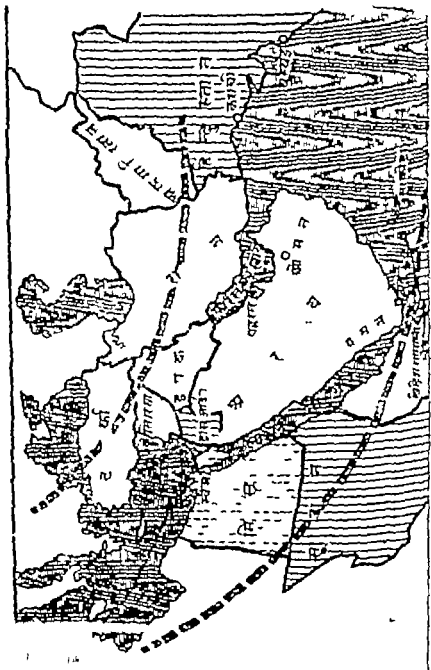
सुईस बन्दरगाह को भूमध्यसागर क मसौना बन्दरगाह से मिलावगी ।

खाइन अंगोरा स रुमा सीमा तक जावगी । आजकल अंगोरा का

रा और कुस्तमुनिया का इस्तम्बोल कहते हैं ।

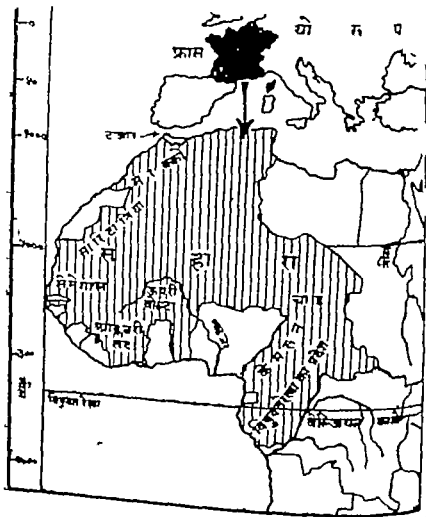
बड़ी खड़ाई के बाद इस और टर्की में बड़ी मित्रता हो गई । हाल

टर्की के पुराने दुश्मन ग्रीस से भी मित्रता हो गई है ।



६-पश्चिमी एशिया में अंग्रेजी अंकुश

पूर्वी भूमध्यसागर को घूम वाला या स्थल प्रवेश खास सागर और म की खाड़ी के बीच में स्थित है यह ब्रिटिश साम्राज्य के बड़े काम है। यहीं हाकर हिन्दुस्तान और हिन्दमहासागर के क्षिय स्राटा समुद्री रा है। यहीं हाकर हिन्दुस्तान और आस्ट्रेलिया के क्षिय ब्रिटिश हवाई जा जात है। इसी माग का काटने के लिये जमनी ने टर्की के भारत जान यानी बल्लिम बनाया रक्षण की योजना की थी। फारस की गि से टर्की हाकर याह्य जान वाला स्थल माग काफी लोकप्रिय हो है। इस माग पर इस समय विशय रूप से ब्रिटेन का नियन्त्रण इस माग में बाधा न पड़ इसलिय मिस्र देश का पूरी आजादी नहीं हो सकता। इसी से ब्रिटिश राजनीतिज्ञ इन्सफुद का ट्रान्सजाहान बनना महन नहीं कर सकते। यकी सदाई न इस प्रवेश पर से तुर्की न को उठ्य लिया। लेकिन एबीसीनिया को विजय और सोमेन (पमन) टर्की की खासों से यह मार्ग सकट में पड़ता जा रहा है।



३०—फ्रान्स और पश्चिमी भूमध्यसागर

जय से सिरिया के ऊपर फ्रांस का मेंबेय (शामन) हुआ है तब पूर्वी भूमध्य सागर भी फ्रांस के सामे बन हो गया है। लेकिन फ्रांस : प्रधान साम्राज्य पश्चिमी भूमध्य सागर के उत्तरी किनारे से रहता है। बाड़े से स्पैनिश बान (पेटी) और ज़रा से अन्तराष्ट्रीय वीर को छोड़ कर सारा उत्तरी अफ्रीका (पुर्तगल प्रदेश) फ्रांस के अधिकार में है। विपुलत रेखा के पास भूत पूर्व अलग उपनिवेशों पर सीसी अधिकार हा ज्ञान स फ्रांस का साम्राज्य भूमध्य सागर क बेथी तट से ३००० मील दक्षिण की ओर बढ़ गया है। यहाँ से तिस को शक्ति के समय कथा माल और बढ़ ई के समय अस्तव्य-पाही मिलते हैं। वैसे ही फ्रांस का राज्य अफ्रीका क पूर्व में मेडेगास्कर और एशिया के फ्रेंच इंडोचीन पर भी है। लेकिन फ्रांस को सब से हा साम उत्तरी-पश्चिमी अफ्रीका से होता है। इसी से फ्रांस पश्चिमी भूमध्य सागर के बल-साम को अपने हाथ में रखने के लिये बा हुआ है।

1951



1951
1951
1951
1951

३१ इटली और लाल सागर

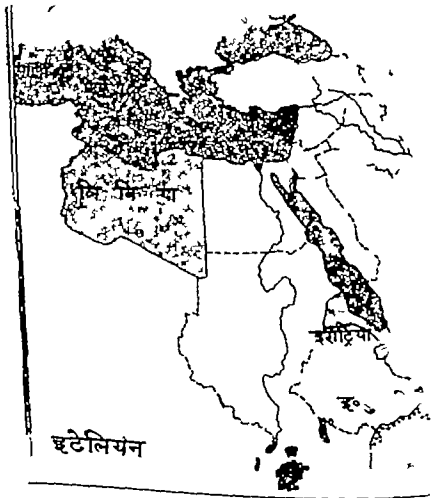
साधारणपण्य की दृष्टि में इटली कुछ विद्वह गया। अफ्रीका के अपने प्रदेश नृमरी जातियों में घेर लिया। भिन्न देश के पास। दुर्गो लिविया का प्रायः रेगिस्तानी प्रदेश १९१२ में इटली ने से छीन लिया। लाल सागर के किनारे इरीट्रिया और इटलियन सो लड पर उमम पहल ही अधिकार कर लिया था। फिर उसने की स्वाधी के पाम वाले अरब प्रदेश पर अधिकार जमाया। में १९३५ में इटली ने एथीयोपिया पर धावा बाजकर सम्ब हवाहं जहाजों के तार म वहाँ ९ महीन के मोतर अधिकार कर । इस समय एथीयोपिया पर इटली का फौजी अधिकार है। से इटली का राजा एथीयोपिया का सम्राट कहलाता है।

उपज



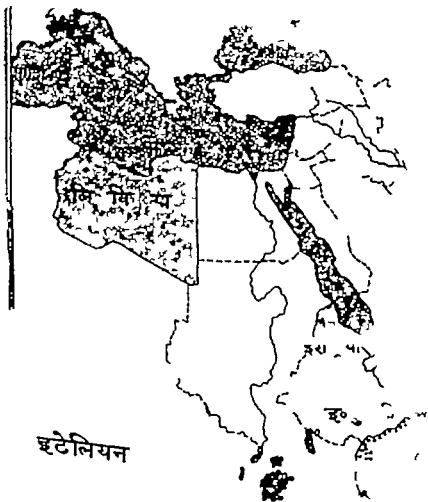
३१ इटली और लाल सागर

आंग्लो-फ्रांसीसी की दौड़ में इटली कुछ पिछड़ गया। अफ्रीका के अपने प्रदेश दूसरी आतियों में घेर लिया। भिन्न देश के पास हुआ ख्रिस्त्विया का प्रायः रेगिस्तानी प्रदेश १६१० में इटली में लीन लिया। लाल सागर के किनारे इरीट्रिया और इथियोपिया लड़ पर उसने पहले ही अधिकार कर लिया था। फिर उसने ही खाड़ी के पाम वास्तु अरब प्रदेश पर अधिकार जमाया। १६३५ में इटली ने एबीसीनिया पर भावा वास्तुकर बम्ब बाई लडाकों के जार से वहीं ६ महीने के भीतर अधिकार कर इस समय एबीसीनिया पर इटली का फीसी अधिकार है। इटली का राजा एबीसीनिया का सम्राट कहलाता है।



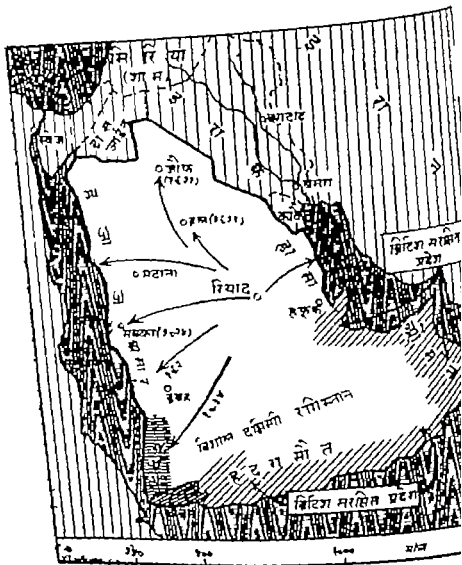
३२—एवीसीनिया

अब मे ५० वर्ष पहले से ही इटली की ऑल एवीसीनिया लगी थी। इटली ने पहले मसावा लिया और इरीट्रिया उप-शा की नींव डाली। फिर इटली ने (इटेलियन) सुमालीलैंड अधिकार घोषित किया। दस वर्ष के बाद इटली को क्राइज ने सीनिया पर चढ़ाई की। लेकिन अदोवा की लड़ाई में इटली बुरी तरह से हार हुई। हाल (१९३६ ई०) में इटली ने जित्त होकर इरीट्रिया और सुमालीलैंड की ओर से एवीसीनिया फिर घावा बोला। उत्तरी चीज को अधिक सफलता मिली। दस अयाबा और उत्तरी प्रवेश इटली के हाथ आया। इटली राजा एवीसीनिया का सम्राट बन गया। लेकिन गैस और ई जहाजों ने दूष जाने पर भी घोर एवीसीनियन लोगों ने ग्रात्री की लड़ाई बराबर जारी रखी है। दुर्गम पहाड़ी भागों में समय भी इटली का अधिकार नहीं हो पाया है। वहाँ सीनिया की ही सरकार मानी जाती है। एवीसीनिया के ट हल सलासी योरुप में निर्वासित हैं। लेकिन वे वहाँ अपने देश को आजाद करन में लगे हुए हैं।



३२—एथीसीनिया

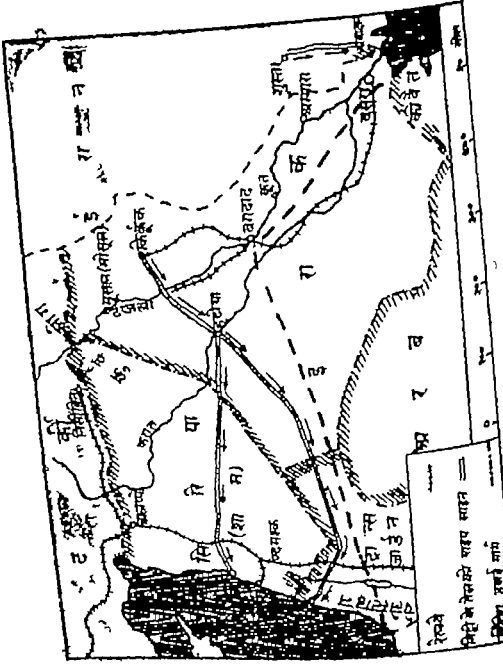
अब मे ५० वर्ष पहले से ही इटली की आँख एथीसीनिया लगी थी। इटली ने पहले मसावा लिया और इरीट्रिया चप-। की नींव डाली। फिर इटली ने (इटेलियन) सुमालीलैंड अधिकार घोषित किया। दस वर्ष के बाद इटली को फ्रान्स ने तिनिया पर चढाई की। लेकिन अदोवा की लड़ाई में इटली री तरह मे हार हुई। हाल (१९३६ ई०) में इटली ने बस होकर इरीट्रिया और सुमालीलैंड की ओर से एथीसीनिया पर घावा बोला। उत्तरी ीज को अधिक सफलता मिली। न अवाभा और उत्तरी प्रदेश इटली के हाथ आया। इटली आ एथीसीनिया का सम्राट बन गया। लेकिन गैस और जहाजों से दूध आने पर भी घोर एथीसीनियन लोगों ने री की लड़ाई बराबर जारी रखी है। दुर्गम पहाड़ी भागों समय भी इटली का अधिकार नहीं हो पाया है। वहाँ निया की ही सरकार मानी जाती है। एथीसीनिया के हेल सलासी योरुप में निर्वासित हैं। लेकिन वे वहाँ ने देश को आजाद करने में लगे हुए हैं।



३३—इब्न सऊद की विजय

पक्षी लड़ाई के बाद अरब के बाहरी प्रदेशों का घटवारा फ्रांस और अंग्रेज के बीच में हो गया। सिरिया में फ्रांस का और पलेस्टाइन, न्यू जाइल (जाइल नदी के दूम पार वाक्ता रेगिस्तानी प्रदेश) और उरु पर मिशन का अधिकार हो गया। प्रधान अरब में इज्जत का एक ब्रिटिश सरपंच में आ गया। इज्जत का शासक अरब क शीप गों पर राज्य करने वाक्ता था। लेकिन भीतरी अरब के मजद प्रदेश राज्य करने वाले वही नेता इब्न सऊद के उत्थान से इन्में ताकत वाक्ता पड़ गई। इब्न सऊद ने पक्षी लड़ाई के पहले ही फारस व्याप्री के किनारे वाक्ता हामा प्रांत की मुकों से धीन लिया। ते लड़ाई के बाद हील और जौफू क सरदार उमकी मातहत में गये। उसने एक बार टाम्म जाइल पर हमला करने की सोची। र उसने लाल सागर के किनारे वाक्ता असोर प्रदेश पर हमला किया र १६२४-२६ में इज्जत प्रदेश जीत लिया। इस प्रकार अरब देश पूर्वी किनारे से पश्चिमी किनारे तक इब्न सऊद का राज्य हो गया। ३४ ई० में उसने धमन पर हमला किया। पर यह धमी तक चीन है। ओमन और इज्जत के सुल्तान भी ब्रिटिश सरपंच में ओमन में मिट्टी के तेल के मिशन की वाक्ता है। इसी से ब्रिटिश लकों ने ओमन सुल्तान का हिन्दुस्तान में धूम-धाम से स्वागत रा।

१६२७ में जिहा में ब्रिटेन और इब्न सऊद के बीच में एक सन्धि । इसके अनुसार ब्रिटेन ने इब्न सऊद की स्वाधीनता मान ली। १६२९ में इज्जत और मजद के राज्य का नाम बदल कर सऊदी कर रक्त दिया।



रेखे

मिठी के लेसके राइप साइन

मिठीका ठुकरे सांभ

अ र ब

० ५ १० १५ २० २५ ३० ३५ ४० ४५ ५० ५५ ६० ६५ ७० ७५ ८० ८५ ९० ९५ १००

५ मील

३४—इराक के मार्ग और मिट्टी का तेल

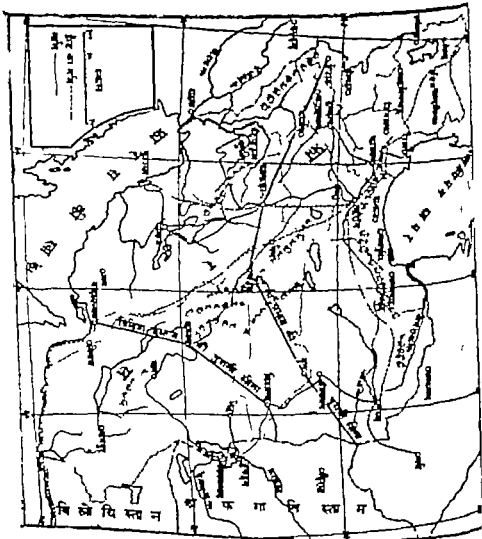
बकी खवाई के बाद इराक में तुर्की राज्य चला गया और उसके स्थान पर अंग्रेजी राज्य हो गया। १९३२ में मिट्टियाँ मेंडेव (सीधा शासन) भी समाप्त हो गया। मिट्टियाँ की खवाई फीज और खवाई बहाजों के मझे अब भी ज्यों के ज्यों हैं।

मिट्टियाँ खवाई जहाजों का प्रधान मार्ग बतादाद होकर हिन्दुस्तान को जाता है। इससे बतादाद में पुराने समय (जब केव आस गुड रोप होकर समुद्री रास्ते का पता नहीं चला था और परिधमी पृथिया के स्थल भागों का मेज बतादाद में ही होता था) की महिमा फिर लख हद तक लौट आई।

इराक के मूसल प्रांत (मोसूल विज्ञापल) में किरकूक के मिट्टी के तेल के खरम बहुत अच्छे हैं। इनको खेम के खिये फ्रॉम्स और ठकीं ने भी जेशिश की। लेकिन इनका अधिकतर मिट्टेन के हाथ में ही रहा। फिर इहाँ के तेल का कुछ भाग फ्रॉम्स का भी मिखने लगा। इसी सं इस लख को खेने के खिये पाइप की एक खाहन किरकूक से सिरिया के त्रूपोखी बन्दरगाह तक जाती है। मिट्टियाँ पाइप खाहन किरकूक से खेस्टाइम के हीफ्र बन्दरगाह को जाती है।

३५— पेलेस्टाइन (फिलिस्तीन) के यहूदी उपनिवेश

बकी लदाई के अन्तर्गत पर ब्रिटेन ने यहूदियों से व्यापारिक लाभ उठाने के लिये पलेस्टाइन में यहूदियों को राष्ट्रीय गृह (उपनिवेश) बनाने का वचन दिया। साथ ही साथ अरबी लोगों से सैनिक सहायता लेना और उन्हें शांति रखने के लिये ब्रिटेन ने अरब प्रदेश को अविच्छिन्न रखने का वचन दिया। इन परस्पर विरोधी बातों का सम्भय कर दिखाना ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के लिये भी ठीकी खीर है। इस समय पलेस्टाइन में ७३ फ्री सदी अरबी और १० फ्री सदी यहूदी लोग रहते हैं। इन १० फ्री सदी यहूदियों में आधे से अधिक यहूदी पलेस्टाइन में ब्रिटिश मैडेट हाथ के बाहर से आकर बसे हैं। अगम्य एक तिहाई यहूदी आवासीय गति के काम में लग गई है। ज़मीन दिखाने का काम यहूदियों की जिम्मेदार संस्था ने किया है। यह यहूदियों की सरकारी संस्था है और उपनिवेश सम्बन्धी मामलों का तय करती है। यहूदी लोग अधिकतर समुद्र-तट पर काफा और एका बन्दरगाहों के बीच में बसे हैं। कुछ हाफा-नाज़रथ के दक्षिण में सुव्रान घाटी और गज़िक्ली मीस के पास बसे हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि पलेस्टाइन में ब्रिटिश साम्राज्य स्थायी रूप से बनाये जाने के लिये ही अरबी लोगों के पुराने कुरमन यहाँ जाकर बसाये गये हैं। कुछ भी हो, अरबी लोग नये आने वाले यहूदी और ब्रिटिश शासकों का धीरे-धीरे विरोध करते हैं। इस समय पलेस्टाइन में एक प्रकार का फौजी शासन (माशाख खा) है।



३६-ईरान का तेल और रेलमार्ग

फारस देश का आधिक्य सरकारी नाम ईरान हो गया है। यही बाई के पहले यह देश दो साम्राज्यों के प्रमुख में था। उत्तरी भाग में सी और दक्षिणी भाग में ब्रिटिश प्रमुख था। इससे बहुत पहले १९०१० में ब्रिटेन को ईरान में मिट्टी के तेल का पता लगाने का विसृत अधिकार मिला गया था। इसको उत्तरी सीमा सहाराम के उत्तर-पश्चिम दक्षिण-पूर्व का जाती थी। इसी में फ्रेंचो पश्चिम आधिक्य कम्पनी में की अंग्रेजी कम्पनी की युनियाय पधी।

१९३२ ई० में रिजाशाह पहलवी की प्रबल सरकार ने इस कम्पनी के को रद्द कर दिया। इससे अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक जगत में सहस्रका ३ गया। ब्रिटिश सरकार इस कम्पनी के हिस्सों की भागिनी थी। अगस्त १९३३ ई० में फिर असमझौता हुआ। तेल का पता लगाने का आधिक्य कम कर दिया गया। कुछ और भी परिवर्तन हुये। रिजाशाह न इम्पीरियल प्वाइन्ट के इवाइ जहाजों का ईरान के प्रवेश के र से होकर उड़ने से मना कर दिया। साथ ही फारस की खाड़ी के रिन द्वीप के ऊपर से ब्रिटिश संरक्षण बूर करवाने का भी प्रयत्न हो रहा ईरान में रक्तों का अभाव है। इस, इराक और अफगानिस्तान की से खाइनें ईरान की सीमा के पास तक (तम्रोज कलशीरी, दज्जदाब) तक उड़कर जाती हैं। फारस की खाड़ी से पाइप खाइने के पास-पास रखने खाइने शुरू कर गई है। इसको कास्पियन सागर तक जाने का विचार हो रहा है।



चीन के पड़ोस में विदेशी पूर्वी राज्य

७-चीन के पड़ोस में विदेशी शक्तियों का जमघट

अगर चीन का देश योरुप में अधिक दूर न होता तो त्वर्ष की तरह चीन भी बहुत पहले ही अपनी आजादी खोता। जय धुआँकश जहाज (स्टीमर) तेजा स चलने लगे तथ एपीय शक्तियों धीरे धीरे चीन में घुमने का प्रयत्न करने लगीं। न में समुद्रीय रास्ते में ही आसानी से घुमना हो सकता है। वम की ओर ऊँचे पहाड़ चीन को एशिया के दूसरे भागों से ग करते हैं। उत्तर की ओर से रूस का प्रभाव पड़ता है। योरुपीय शक्तियों उन्नीसवीं मदी के अन्त में और बीसवीं के आरम्भ में जलमार्गों द्वारा चीन में प्रवेश करने लगीं। ने अपने व्यापार को बढ़ाने के लिये चीन में स्वतन्त्र सन्धि-ची यन्त्रगाह (Treaty Ports) स्थापित किये। जापान ने फोरिया और मचूकुओ (मचूरिया) में अपना स्थापित कर लिया। अब घट उत्तरी चीन में पठ रहा है। ने हांगकांग पर अधिकार करके कैंटन और दक्षिणी चीन पार का अपनाया। सिंगापुर का ब्रिटिश जहाजी अड्डा से कबल १५०० मील दूर है। इन्डोचीन में फ्रान्स का अधि-। संयुक्तराष्ट्र अमरीका फिलीपाइन द्वीप में बटा हुआ है। न में जापानी अधिकार हो जाने के कारण रूस का चीन न सम्बन्ध नहीं रह सका है। उच लोग अधिक दक्षिण र पड़ गये हैं। वे अधिक बलवान भी नहीं हैं।



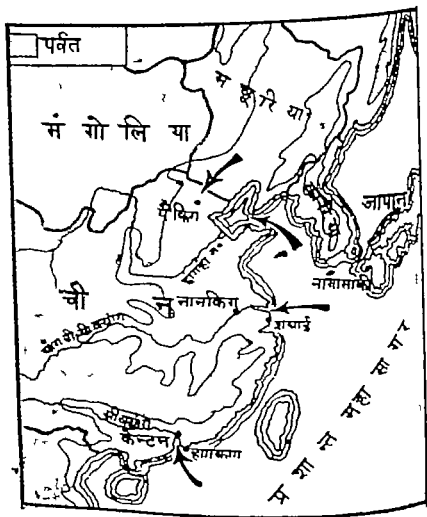
जापानी साम्राज्य

३८-जापानी साम्राज्य

पान ने योरुपीय शक्तियों की तरह नये हथियारों से सुस-
 कर हाल में फैलाने का प्रयत्न किया है। पर आगे बढ़ने
 मजबूती के साथ हो रहा है। १८९४-९५ में चीन को
 उसने फोरमूसा पर अधिकार कर लिया। १९०४-५ में
 हरा कर जापान ने कोरिया और पोर्टआर्थर पर अधि-
 लिया। १९१० में कोरिया देश खुल्लमखुल्ला जापानी
 में मिला लिया गया। साथ ही साथ दक्षिणी मंचूरिया
 न अपनी स्थिति को मजबूत करता गया।
 लड़ाई में क्याओखाओ में जर्मनों को भगा कर जापान
 अधिकार कर लिया। यही लड़ाई के समाप्त होने पर
 आओ नाम मात्र के लिये चीन को लौटा दिया गया,
 शान्त महासागर के जिन द्वीपों पर जर्मनी का अधिकार
 पर राष्ट्रसंघ की ओर से जापान राख्य करने लगा।
 पर हमला करने के समय राष्ट्रसंघ की सवस्यता से
 इस्तीफा दे दिया। लेकिन प्रशान्त महासागर के मूखपूर्व
 शों पर जापान पूर्णतः शासन करता है। मंचूरिया में
 जाने के बाद जापान ने उत्तरी चीन को अपनाते का
 किया।

३८—जापानी साम्राज्य

ान ने योरुपीय शक्तियों की तरह नये हथियारों से सुस-
 ळर हाल में फैलने का प्रयत्न किया है। पर आगे बढ़ने
 मजबूती के साथ हो रहा है। १८९४-९५ में चीन को
 उसने फारमूसा पर अधिकार कर लिया। १९०४-५ में
 हरा कर जापान ने कोरिया और पोर्टआर्थर पर अधि-
 र लिया। १९१० में कोरिया देश सुल्लमसुल्ला जापानी
 य में मिला लिया गया। साथ ही साथ दक्षिणी मंचूरिया
 न अपनी स्थिति को मजबूत करता गया।
 डी लड़ाई में क्वाओचाओ से जर्मनों को भगा कर जापान
 ना अधिकार कर लिया। यही लड़ाई के ममाप्त होने पर
 वाओ नाम मात्र के लिये चीन को लौटा दिया गया,
 प्रशान्त महासागर के जिन द्वीपों पर जर्मनी का अधिकार
 पर राष्ट्र-संघ की ओर से जापान राज्य करने लगा।
 पर हमला करने के समय राष्ट्रसंघ की सदस्यता से
 ने इस्तीफा दे दिया। लेकिन प्रशान्त महासागर के भूतपूर्व
 देशों पर जापान पूर्ववत् शासन करता है। मंचूरिया में
 जो जान के बाद जापान ने उत्तरी चीन को अपनाते का
 किया।

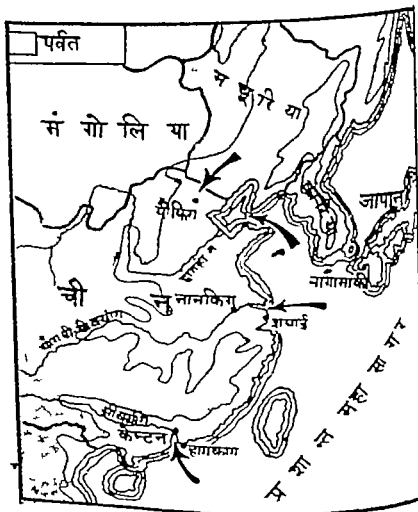


चीन में पुराने के मार्ग

३६-चीन में घुसने के मार्ग

बाहर से चीन में प्रवेश करने के लिये तीन प्रधान जल-मार्गों का नवियों ने घनाये हैं। हांगहो उत्तर चीन में, यागटिसी-यांग मध्यचीन में और सीक्यांग दक्षिणी चीन में प्रवेश करने लिये प्रधान मार्ग बनाती हैं। इन नदियों के मुहानों पर विदेशियों का अधिका है। हांगकांग द्वीप और पक्षोस की जमीन पर चीनी अधिकार होने के कारण दक्षिणी प्रवेश मार्ग की कुंजी इनके हाथ में है।

यागटिसीक्यांग के मुहाने पर बसे हुए शचाई शहर में कई शक्तिशाली शक्तियों का अधिका है। इनमें मयुक्त-राष्ट्र अमरीका और जर्मनी प्रधान हैं। यागटिसीक्यांग में सैकड़ों मील तक जहाज आसकते हैं। लेकिन इसका मुहाना विदेशियों के अधिकार में है। के कारण विदेशी शत्रु इय नदी के मार्ग से लड़ाका जहाज आकर चीन के द्वय में छुड़ी मॉफ सकते हैं। कोरिया पर चीनी अधिकार होने से चीन का उत्तरी जल-मार्ग जापान के अधिकार में है। सर्वोत्तम सुगम स्थल मार्ग उत्तर की ओर में यहाँ पहले रुस का प्रभाव था। आलफल मचूरिया में जापान का अधिकार होने से उत्तरी स्थलमार्ग की कुंजी जापान के हाथ में है। इसी ओर से जापान ने चीन पर आक्रमण करने निश्चय किया है।



चीन से घुसने के मार्ग

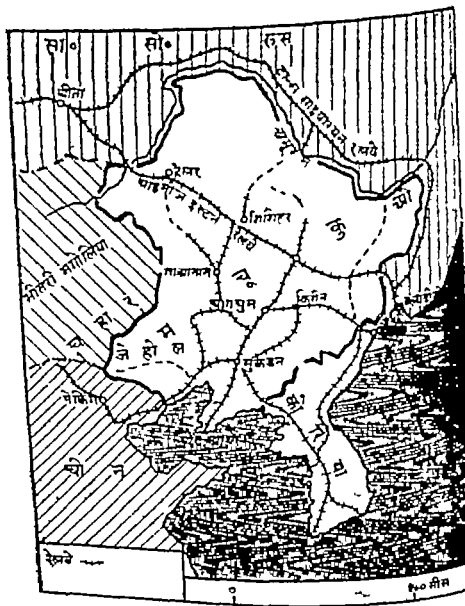
४०—मंगोल लोगों का देश

रूसी-जापानी लड़ाई के बाद जापान ने रूस और चीन के बीच वाले प्रदेश में बढ़ने की जी-सोड़ कोशिश की है। मंचूरिया पर अधिकार करने के बाद जापान ने रूस और चीन के बीच नई स्थलीय रुकावट डाल दी है। इससे इन दोनों के बीच स्थल-मार्ग द्वारा आसानी से आना जाना नहीं हो सकता। मंचूरिया में जापान का फ़ौजी अड्डा स्थापित हो जाने से उसे उत्तर, दक्षिण और पूर्व की ओर आक्रमण करने का अवसर मिल गया है।

जापानी सिपाही और एजेन्ट बड़ी तेज़ी से हाल में भीतरी (Inner) मंगोलिया में बढ़ रहे हैं। मंचूरियों के सिंगनान्त में रहने वाले २० लाख मंगोल लोग उसके शासन में पहले ही आ गये हैं। वधे हुए ३० लाख मंगोलों में से १० लाख भीतरी (Outer) मंगोलिया के रेगिस्तान में, १० लाख मंगोलिया में और १० लाख चीनी तुर्किस्तान, तिब्बत के कोकोर प्रान्त और पशियाई रूस के घुरियत प्रजातन्त्र में रहते हैं।

४१-मंचूकुओ और रूस-जापान

जापान ने मन्चूरिया को चीन से छीन कर पहले ही मंचू-
तो नाम से एक अलग राज्य स्थापित कर लिया। मन्चूरिया
(मंचूओ) पर जापानी अधिकार हो जाने से रूस, साइबेरिया
(प्रशांत महासागर तट (व्लादीवस्तोक) के बीच में आने
के मार्गों में बाधा पड़ती है। ट्रान्स साइबेरियन रेलवे का
अमूर नदी के उत्तर में है। १८९६ में 'जार की सरकार ने
मेमन्धि कर के व्लादीवस्तोक तक उत्तरी मंचूरिया में
रशाइनीश ईस्टर्न रेलवे निकाल ली। क्रांति के बाद रूस ने
रेखा के साथ अधिकार छोड़ दिये। लेकिन इस रेलवे पर
जापान अधिकार बना रक्खा। अन्त में रूस ने इस रेलवे के भी
अधिकार जापान (मंचूओ) के हाथ बेच दिये। इन दो
न रेलवे लाइनों के अतिरिक्त जापान ने मंचूओ में कई नई
रेलवे निकाल कर मंचूरिया (मंचूओ) में रेलों का जाल सा
लिया है।



४१-मंचूकुओ और रूस-जापान

जापान ने मन्चूरिया को चीन से छीन कर पहले ही मंचू-
 नाम से एक अलग राज्य स्थापित कर लिया। मन्चूरिया
 (शुआ) पर जापानी अधिकार हो जाने से रूस, साइबेरिया
 प्रशासक महासागर तट (व्लाडीवस्तोक) के बीच में आने
 के मार्गों में बाधा पहुँचती है। ट्रान्स साइबेरियन रेलवे का
 अमूर नदी के उत्तर में है। १८९६ में 'पार की सरकार ने
 से मन्चूर के व्लाडीवस्तोक तक उत्तरी मन्चूरिया में
 साइबेरियन रेलवे निकाल ली। क्रांति के बाद रूस ने
 ऐसा क समय अधिकार छोड़ दिये। लेकिन इस रेलवे पर
 जा अधिकार बना रक्खा। अन्त में रूस ने इस रेलवे के भी
 अधिकार जापान (मंचूकुओ) के हाथ बेच दिये। इन दो
 रेलवे लाइनों के अतिरिक्त जापान ने मंचूकुओ में कई नई
 निकाल कर मन्चूरिया (मंचूकुओ) में रेलों का जाल सज
 लिया है।



चीन विच्छेद

४२—चीन-विच्छेद

गत ९० वर्षों से चीन के प्राचीन साम्राज्य का विश्वस करने में कई योरुपीय शक्तियाँ लग गईं। ब्रिटेन, रूस और फ्रांस ने चीन के कई घाटरी भाग वृथा लिये। जापान ने फोरिया को छीनने के बाद मंचूरिया, भीतरी मंगोलिया और उत्तरी चीन को हड़पना आरम्भ कर दिया। नानकिंग की चीनी सरकार का प्रभुत्व मध्य चीन और दक्षिणी चीन में बहुत प्रबल है। पश्चिम के भीतरी भागों में मण्डूरों और किसानों का पचायती राज्य है। इनके शत्रु इन्हें अक्सर झाफू कहते हैं। वे फौजी शासकों का विरोध करते हैं। इन सब को एकता के सूत्र में बाँध कर चियांग-काई-रोक ने चीन में एक प्रबल प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया। इतने ही में जापान ने युद्ध छेड़ दिया।

—रेलवे
 ● कोपलेकीखानें
 ▨ बड़े कारखारी
 शहर

म चूरि या



। प्राबवी वाले प्रदेश
 फू केन
 फूचाऊ
 गाना फोरा के सरका

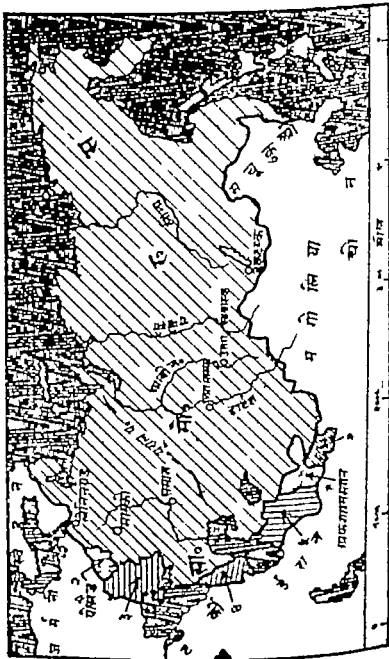
४३—नानकिंग की सरकार

नानकिंग की सरकार क्यांग काई शोक की अश्वसुता में मध्य चीन के उन प्रान्तों पर राज्य करती है जो यांग्तिसीक्यांग उत्तर और दक्षिण में स्थित हैं। उत्तर की पुगानी राजधानी या पेपिंग में जापानी प्रभुत्व है। क्यांग काई शोक की शक्ति केन्द्र कैन्टन था। यहाँ चीनी प्रजासन्त्र के संस्थापक सन-का प्रभुत्व था। हांगकाओ-कैन्टन रेलवे के बंद जाने यांग्तिसी भाग और कैन्टन प्रदर्शक हो गये हैं। इसी भाग का अधिकार है और इसी भाग में चीन की सबसे बड़ी बस्ती हुई है।

४३-नानकिंग की सरकार

नानकिंग की सरकार च्यांग काई शेक की अध्यक्षता में मध्य चीन के उन प्रान्तों पर राज्य करती है जो यांग्तिसीक्यांग के उत्तर और दक्षिण में स्थित हैं। उत्तर की पुरानी राजधानी पेकिंग या पोंपिंग में जापानी प्रभुत्व है। च्यांग काई शेक की शक्ति का केन्द्र कैंटन था। यहाँ चीनी प्रजातन्त्र के संस्थापक सन-यातसेन का प्रभुत्व था। हांगकाओ-कैंटन रेलवे के धन जाने से यांग्तिसीक्यांग और कैंटन प्रवेश एक हो गये हैं। इसी माग में फारधार की अधिकता है और इसी माग में चीन की सपसे धनी श्वायादी बनी हुई है।





अ म नी

पेसिड

म्यांकी

सम्भार

मो

पुणे

मद्रास

म गो लि या ची

न

प

पुणे

मद्रास

म गो लि या ची

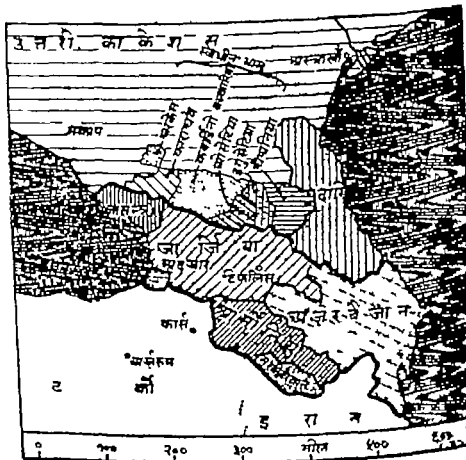
प

प

४५-नवोन रूस के राजनैतिक विभाग

नवोन रूस को अल्पसङ्ख्यक जातियों की सबसे बिकट समस्याओं को हल करना पड़ा । १९२६ की मनुष्य-गणना के अनुसार रूस में १७४ भिन्न भिन्न जातियाँ रहती हैं । मसत जन-संख्या लगभग १७ करोड़ है, जो हमारे देश की लगभग आधी है । इनमें ३ लोग योरुपीय रूस में रहते हैं । एशियाई रूस का क्षेत्रफल बहुत बड़ा है । दोनों ही भागों में कई प्रकार की प्राकृतिक सम्पत्ति है ।

वर्तमान मान्यवादी सोवियत रूसी प्रजातन्त्र सब में मात्र बड़े-बड़े प्रजातन्त्र और कई छोटे छोटे स्वाधीन (परेडू प्रबन्ध में) शिले शामिल हैं । बड़े बड़े प्रजातन्त्रों में कई छोटे छोटे प्रजातन्त्र राष्ट्र शामिल हैं । साथ बड़े-बड़े प्रजातन्त्र राष्ट्र ये हैं — (१) रूसी सोवियत मान्यवादी प्रजातन्त्र संघ । इसमें अधिकांश योरुप और पूरा साइबेरिया शामिल है । (२) श्वेत रूसी प्रजातन्त्र पश्चिमी योरुप का सीमा को छूता है । (३) यूक्रेन प्रजातन्त्र । यहाँ खेती बहुत अच्छी होती है । (४) ट्रांस काकेशस प्रदेश के छोटे छोटे पहाड़ी प्रजातन्त्र राष्ट्र (जार्जिया, आर्मेनिया, अजरबैजान) । (५) ताजिकिस्तान । (६) युजबेकिस्तान, और (७) तुर्कमानिस्तान । आखिरी तीन प्रजातन्त्र सब के सब एशिया में स्थित हैं ।



४७-काकेशस प्रदेश

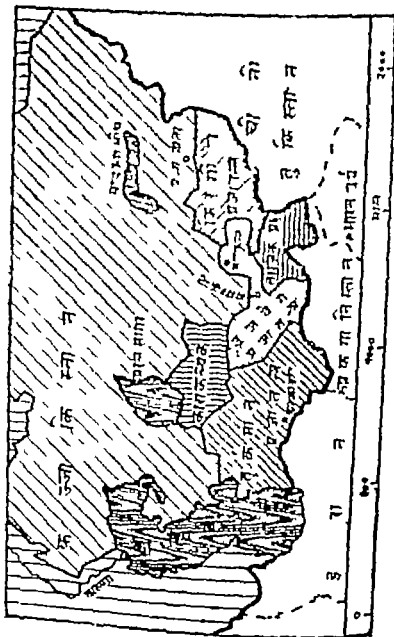
काकेशस प्रदेश कास्पियन सागर और काले सागर के बीच स्थित है। सिट्री के तेल की अधिकता होने के कारण इस देश का महत्व बहुत बढ़ गया है। १९१७ की क्रान्ति के बाद यहाँ १२१ ई० तक गृह कलह चलती रही। इसके बाद रूसी प्रजासत्तक सरकार ने यहाँ कई स्वाधीन प्रजातन्त्र स्थापित करके यह लोगों की राजनैतिक माँगें पूरी कीं।

(१) काकेशस प्रदेश के उत्तरी भाग में रूसी साम्यवादी सोवियत प्रजातन्त्र सभ का शासन है। इसमें कई छोटे छोटे स्वाधीन जिले मिले हैं। (२) कास्पियन सागर के पश्चिमी किनारे पर दागिस्तान का प्रजातन्त्र है। (३) ट्रान्स काकेशस प्रजातन्त्र-सभ में जर्जिया (जिसकी राजधानी टिफलिस है), आर्मेनिया (राजधानी एरिवाण) और अज़रबैजान (राजधानी बाकु) शामिल हैं। इन तीनों प्रजातन्त्रों में भी एक दो स्वाधीन जिले शामिल हैं।

४८-पश्चिमी साइबेरिया और तुर्किस्तान

रूसी सरकार पश्चिमी साइबेरिया के कारवार बढाने और नै योरुपीय भाग में जोड़ने का धोर प्रयत्न कर रही है। ल्नेट्ज में, डोनेट्ज से छ गुना कोयला है। कुस्नेट्ज में ४५० मिलियन टन कोयला खन्दाजा गया है। यह भाग यूगल क निज और कारवारी प्रदेश से जोड़ा जा रहा है।

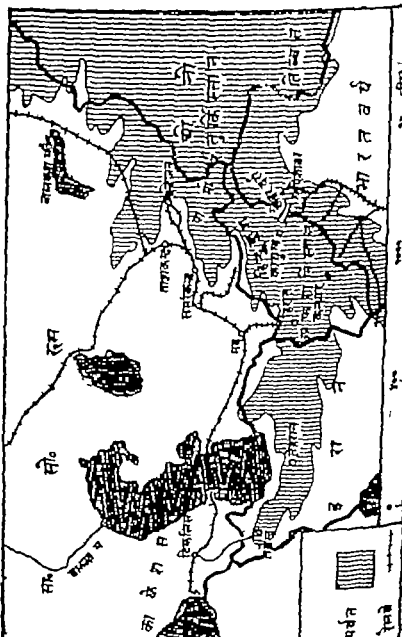
इसक वरिष्ण में तुर्किस्तान है, जो आजकल कजाकस्तान जातन्त्र और कई छोटे छोटे स्वाधीन खिलों में बँटा हुआ है। इ प्रदेश तुर्क-साइबेरियन रेलवे द्वारा जोड़ लिया गया है। रेलवे शकन्द से उत्तर की ओर बढ़ती है। यह लाइन दुनिया भर में ए से बड़ी रेलवे लाइन है।



४६—रूसी मध्य एशिया की जातियाँ

उन्नीसवीं सदी के अन्तिम भाग में तुर्किस्तान रूसी साम्राज्य में मिला लिया गया। ज़ार का साम्राज्य अफ़ग़ानिस्तान को छूने लगा। ज़ार की इस बढ़ती हुई शक्ति और ब्रिटिश भारत पर पाषाण आक्रमण को रोकने के लिये ब्रिटिश राजनीतिज्ञ तरह तरह के प्रयत्न करने लगे। क्रान्ति के बाद इस प्रदेश में जो गृह-कलह फैली वह १९२४ तक शान्त न हुई। इस समय यहाँ निम्न राज-नैतिक विभाग हैं —

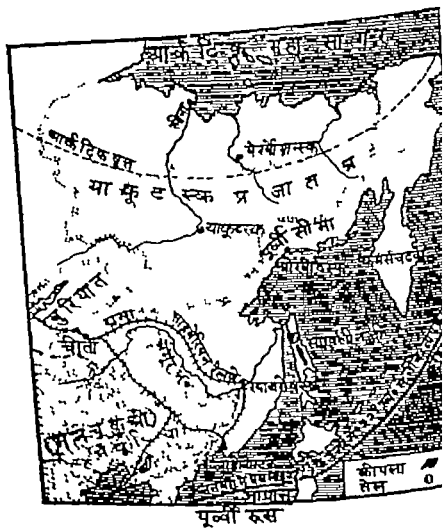
कज़ाकस्तान प्रजासन्न राज्य में अधिकतर घुमक्कड़ किरगीज़ लोग रहते हैं। काराकल्पक का प्रदेश स्वाधीन है। तुर्कमनिस्तान में तुर्कमान मुसलमान रहते हैं। उज़बेकिस्तान में कपास खूब होती है। यहीं इस प्रदेश में सय से अधिक भाषाएँ हैं। यहीं मध्य एशिया के तीन प्रधान नगर (ताशकन्द, समरकन्द और ख़ार) स्थित हैं। ताजकिस्तान पहाड़ी प्रदेश है। इसके पूर्वी भाग में ऊँचा पठार या युनिया की छत है। किरगीजिया में ढेर लाने वाले लोग रहते हैं।



५०—अफगानिस्तान और मध्य एशिया की सीमायें

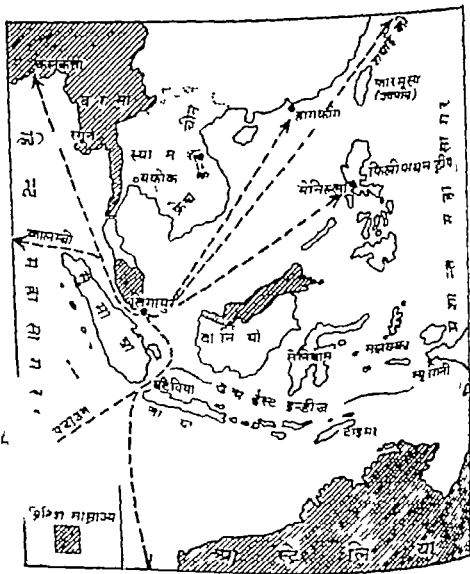
अफगानिस्तान का पहाड़ी देश उत्तरी हिन्दुस्तान को एशिया
रूस से अलग करता है। रूस और ब्रिटेन की आपस की
पुरानी फूट के कारण अफगानिस्तान में रेल न खुल सकी।
लेकिन रूस की रेलें (मर्ग के भागे कुश्क के पास) अफगा-
निस्तान की उत्तरी सीमा को छूती हैं। इस की दक्षिणी सीमा
के पास उत्तरी-पश्चिमी सीमा प्रान्त और बलोचिस्तान की
रेलवे लाइनें आकर रुक जाती हैं। हिरात और कन्धार तथा
शाबर और कायुल होकर हिन्दुस्तान की रेलवे लाइनें यहाँ
पासानी में रूसी रेलों से जोड़ी जा सकती हैं।

अफगानिस्तान में कई बार ब्रिटिश फौजों ने प्रवेश किया
१२१ में ब्रिटेन और अफगानिस्तान के बीच में नई सन्धि
है। इस के अनुसार अफगानिस्तान की स्वाधीनता स्वीकार
र ली गई। रूस के विरोध अधिकार कुछ कम कर दिये गये।
हिन्दुस्तान होकर अफगानिस्तान को हथियार और कौजी सामान
गाने की सुविधा कर दी गई।



५१-एशिया में रूस का सब से अधिक पूर्वी प्रदेश

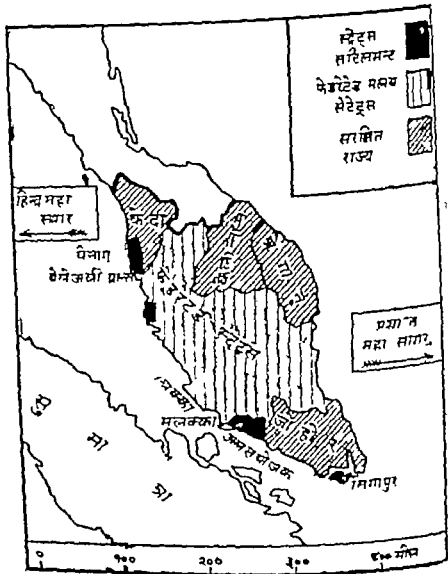
रूस का सब से अधिक पूर्वी प्रदेश दो भागों में बँटा है। याकुट्स्क प्रजातन्त्रसभ्य से अधिक बड़ा है। लेकिन इसकी जनसंख्यासभ्य से कम है। सुदूर पूर्वी प्रजातन्त्र में कुछ आर्कटिक तट और समूचा रूर्मी प्रशान्त महासागर का तट शामिल है। इसी में कमचटका प्रायद्वीप और आषा (उत्तरी) साखालिन द्वीप जापान के अधिकार में है। इस प्रदेश की राजधानी खयारोव्स्क गगर है जो अमूर नदी पर स्थित है। साखालिन के कोयले और मिट्टी के तेल को छोड़कर इस प्रदेश की प्राकृतिक सम्पत्ति में कुछ भी उपयोग नहीं हुआ है। लेकिन अगली पंचवर्षीय योजना में रूस ने यहाँ फई रेलवे, कारखाने और प्लाडीवोस्टक उत्तर में एक बड़ा दन्दरगाह बनाने का निश्चय किया है। घूरिया में जापानों प्रभुत्व हो जाने से रूस के इस प्रदेश को जापान का सदा भय लगा रहता है। इस समय फेवल ट्रान्स बोरियन रेलवे इस भाग को दूसरे भागों से जोडती है। इसी रूसों हयाइ जहाजा का एक बड़ा अचानक हमला को बने के लिये बनाया गया है।



१२-दक्षिणी-पूर्वी देशों का समुद्री चौराहा—सिंगापुर

विशाल प्रशान्त महासागर का पूर्वी दरवाजा पनामा और
और पश्चिमी दरवाजा सिंगापुर है। सिंगापुर में ब्रिटिश साम्राज्य
के पूर्वी भागों का रक्षा के लिये सबसे बड़ा जहाजी अड्डा बनाया
गया है। जब १८१९ में रेफिन्स साहब ने सिंगापुर को मिलाया
तो उन्होंने लिखा कि सिंगापुर के मिलाने से ब्रिटिश साम्राज्य
को न केवल एक द्वीप मिले बरन चीन-जापान और स्वाम,
ऑस्ट्रिया के लिये जलमार्ग का अधिकार मिल गया।

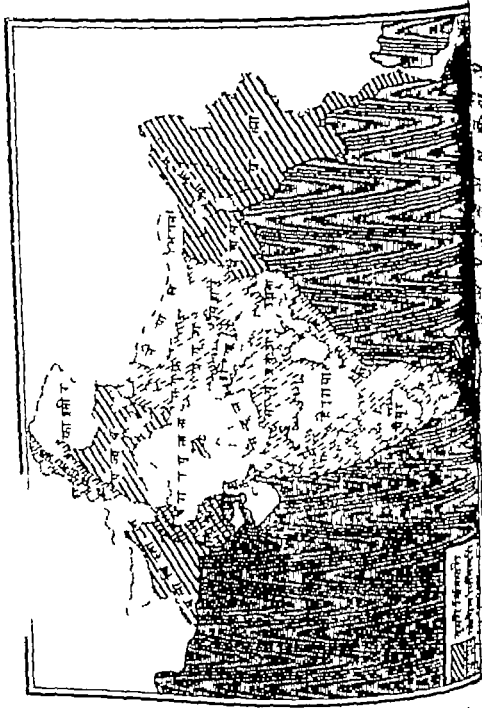
सिंगापुर के जहाजी अड्डे के बनाने में लगभग १५ करोड़
पये खर्च हो चुके हैं। इस अड्डे से न्यूजीलैंड और आस्ट्रे-
लिया की रक्षा करने में सुविधा होगी। यहाँ से चीन और
जापान में भी ब्रिटिश हितों की रक्षा की जा सकती है। कुछ
गोप्यता का अनुमान है कि इस अड्डे के समन्वय में पूर्वी द्वीप
मूर्तों की रक्षा के लिये हार्नेट वालों ने ब्रिटिश से समझौता
कर लिया है। लेकिन जापान इसको सम्येह की दृष्टि से
पता है।



५३-मलय प्रायद्वीप

हिन्दू महासागर और प्रशान्त महासागर के बीच में मलय प्रायद्वीप की स्थिति बड़े भागों की है। अठारहवीं सदी के प्रायः अन्त में ईस्टइंडिया कम्पनी ने पेनांग में अपना अड्डा जमाया। मलका पर पहले पुर्चगालियों का अधिकार था। फिर डच (डॉलैंड) के लोगों ने यहाँ अपना अधिकार जमाया। अन्त में उनमें अँगरेजों ने इसे छीन लिया। इसके बाद अँगरेजों ने सिंगापुर में अपना उपनिवेश बनाया। इस समय ममस्व मलय प्रदेश पर ब्रिटिश अधिकार है। पेनांग बेलेशली प्रान्त मलका प्रायद्वीप में सिंगापुर में ब्रिटिश फ्राउन कलोनी (स्ट्रेट्स सेटिलमेन्ट) है। चार कंटेन्टेड मेजे स्ट्रेट्स (रियामता में) ब्रिटिश प्रमुख हैं। म मात्र क लिये इन रियामता में अलग अलग सुलतान हैं। मलय प्रायद्वीप के दूसरे (कम्बा, केलन्तान, ट्रेंगानू और जोहोर) न्यों क शासक अलग अलग हैं। वे ब्रिटिश संरक्षा में हैं और अँगरेजी सलाहकारों के अनुसार चलते हैं।

अब से ६० वर्ष पहले यहाँ टिन की खानों का पता चला तो से अँगरेजों ने इस प्रायद्वीप के भीतरी भागों में घुसना शुरू किया आज कल रबर और टिन यहाँ की प्रधान सम्पत्ति रबर के बगीचों में हिन्दुस्तानी और चीनी की खानों में चीनी दूर काम करते हैं। इस समय हिन्दुस्तानी और चीनी लोगों से भी सख्खा मिलकर यहाँ के मूल निवासी मलय लोगों से भी एक है।



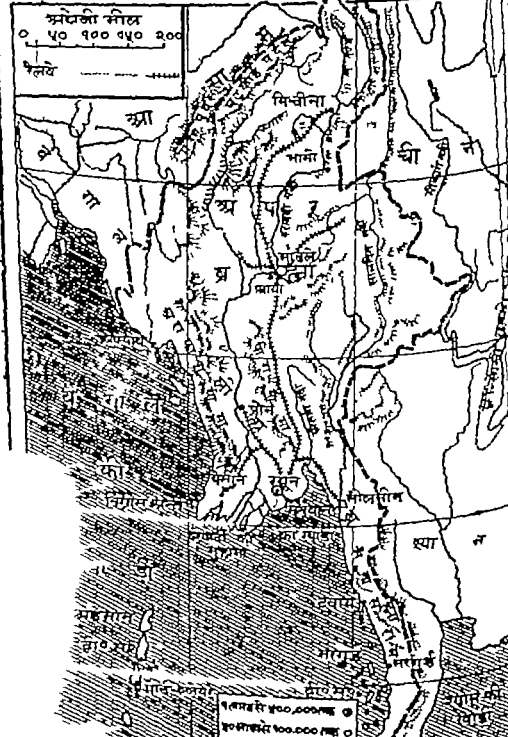
५४—भारतवर्ष

भारतवर्ष का लगभग ३ भाग देशी राज्यों और शेष ३ भाग ब्रिटिश प्रान्तों में बँटा हुआ है। कुछ देशी राज्य इतने पुगने हैं कि वे ब्रिटेन के आने के पहले भी मौजूद थे। कुछ राज्य पहले बने प्रवल थे कि उन्होंने अपनी इस्ट इण्डिया कम्पनी से सवारी की मन्धि की। लेकिन देशी राज्यों के आपस की फूट ने उनकी पराधीनता या पराधीनता में बदल गई। जब राजा बर्ष पराधीन हो और सब काम रेजिडेंट या एजेंट के इशारे में जाता हो तो वहाँ प्रजा की पराधीनता दुगनी बढ़ जाती है। देशी राज्यों के कुछ भोल भाले लोगों को अपनी दुहरी पराधीनता पता न लगा। वे अपने राजा का स्वतन्त्र समझ कर अपने का स्वामी मानने लगे। लेकिन ब्रिटिश भारत में एकदम ब्रिटेन की शक्ति हो जाने से लोगों को विदेशी शासन खटकने लगा। पहले १८५७ में लोगों ने ब्रिटिश सत्ता का सशस्त्र मुकामिला

अपेक्षा मील

0 50 100 150 200

रेलवे



१. लम्बाई से ५००,००० फुट \odot
 २. चौड़ाई से १००,००० फुट \circ

-वरमा और स्याम

वरमा और हिन्दुस्तान के बीच में जंगली धारपहाड़ी मार्ग कुछ सुगम है। समुद्री मार्ग अधिक सुगम है। रगून का बन्दरगाह कच्छकत्ते से केवल ७००० मील और मद्रास से १००० मील दूर है। फिर भी हिन्दुस्तान और वरमा का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। ब्रिटिश राज्य में शामिल हो जाने पर भी हिन्दुस्तानी तरह तरह के कर्मों में यहाँ छग गया। जब हिन्दुस्तान में राष्ट्रीय आन्दोलन ज़ार पकड़न लगा तब उसका असर वरमा में भी फैलने लगा। वरमा का मिट्टो का तेल, सागौन की लकड़ी और चायक मिट्टिश व्यापार के लिये बड़े काम की चीज है। भारतवर्ष के राष्ट्रीय आन्दोलन से अलग रखने के लिये नव शासन विधान के अनुसार १९३२ ई० में वरमा भारतवर्ष से अलग कर लिया गया।

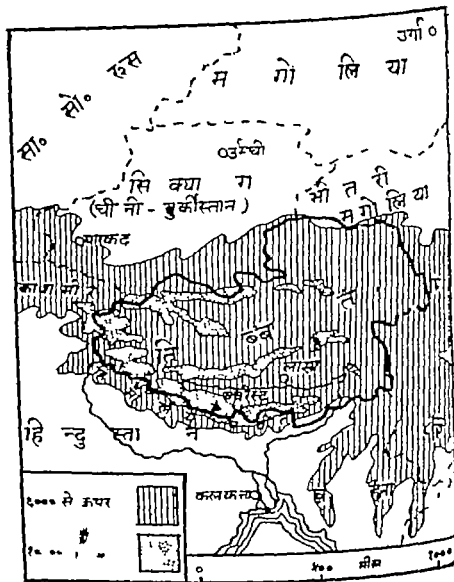
स्याम देश वरमा और फ्रेंच इंडोचीन के बीच में स्थित है। ब्रिटेन और फ्रांस दोनों ही न स्याम से छाम उठाने की भरसक काशिश की। पर दोनों की पुरानी मनबन से स्याम की स्वाधीनता कायम रही। हाल में जापान ने भी इधर अपना प्रभाव बढ़ाने की सोची। स्याम में कई बार राजनैतिक उथल पुथल हुई। १९३२ के माघ महीने में यहाँ के राजा प्रजाधिपति के सिंहासन त्याग दिया। १९३१ और १९३४ के बीच में स्याम में जापानी व्यापार २०० फी सदी बढ़ गया। जब से ब्रिटेन ने सिंगापुर में बहाजी बहाड़ा बनाया है तब से जापान ने कारखाने लगाए हैं और बहाजी नहर निकालने की बुनियाद भी है। यदि इस में जापान की सफलता मिले तो सिंगापुर का महत्व मिट्टी में मिल जायगा। जिस प्रकार पनामा समुद्र राष्ट्र अमरीका की नहर है वही प्रकार यहाँ की नहर जापान के हाथ में होगी।



५६—तिब्बत

तिब्बत और भारतवर्ष का चनिष्ट भौगोलिक सम्बन्ध है। जय से भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित हुआ तब से ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत में भी अपना प्रभाव जमाने का प्रयत्न किया। उधर रूस की आरम्भाही भी तिब्बत को अपने लिये लगी। १९०३ ई में ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत को व्यापारिक द्वार खोलने के लिये मजबूर करने के लिये एक सैनिक टोली लासा (तिब्बत की राजधानी) को भेजी।

१९११ में चीनी क्रांति के बाद तिब्बत में चीनी आधिपत्य फिर मान लिया गया। हाल में चीन में जो गड़बड़ी हुई उससे लाभ उठा कर ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत के ब्लाई लामा से मैत्री करके वहाँ ब्रिटिश प्रभाव फिर स्थापित कर लिया। पर ताशी लामा के लौटने से आशा है कि तिब्बत फिर पूर्ण स्वाधीन हो जावे और वहाँ विदेशियों के हथकड़े न चलने पावें।



५६—तिब्बत

तिब्बत और भारतवर्ष का पनिष्ठ भौगोलिक सम्बन्ध है। तब से भारतवर्ष से ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित हुआ तब से ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत में भी अपना प्रभाव जमान का प्रयत्न किया। उधर रूस की पारशाही भी तिब्बत को अपना लगी। १९०३४ में ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत को व्यापारिक द्वार खोलने के लिये मजबूर करने के लिये एक सैनिक टोली लामा (तिब्बत की राजधानी) को भेजी।

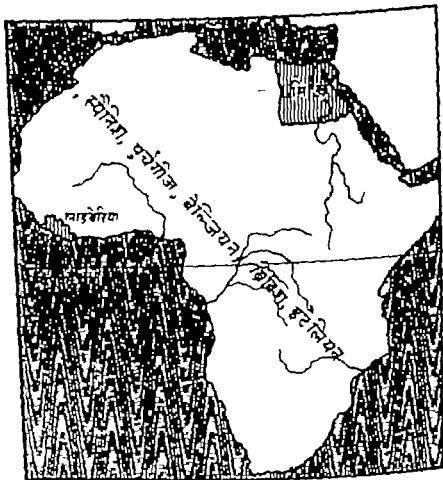
१९११ में चीनी मन्त्रि के घाट तिब्बत में चीनी आधिपत्य फिर मान लिया गया। हाल में चीन में जो गड़बड़ी हुई उससे लाभ उठा कर ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत के इलाके लामा से निन्नी करके वहाँ ब्रिटिश प्रभाव फिर स्थापित कर लिया। पर लामा के खोदने से आशा है कि तिब्बत फिर पूर्ण स्वाधीन हो जावे और वहाँ विश्वेशिया के हथकड़े न चलने पायें।



५६—तिब्बत

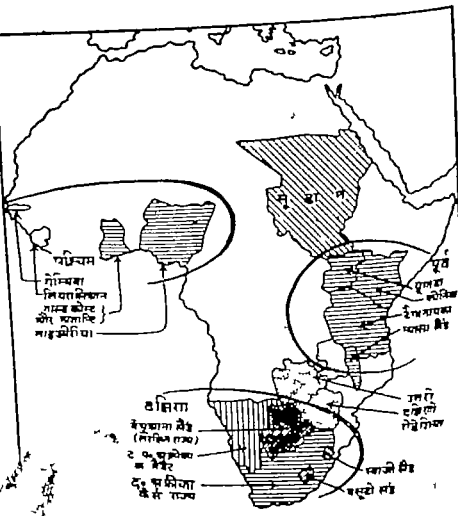
तिब्बत और भारतवर्ष का घनिष्ठ भौगोलिक सम्बन्ध है। जब से भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य स्थापित हुआ तब से ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत में भी अपना प्रभाव जमाने का प्रयत्न किया। १९०३ की खारशाही भी तिब्बत को अपने अन्तर्गत कर ली। १९०३ में ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत को व्यापारिक द्वार खोलने के लिये मजबूर करने के लिये एक सैनिक टोली लासा (तिब्बत की राजधानी) को भेजी।

१९११ में चीनी क्रान्ति के बाद तिब्बत में चीनी आधिपत्य फिर मान लिया गया। हाल में चीन में जो गड़बड़ी हुई उससे लाभ उठा कर ब्रिटिश सरकार ने तिब्बत के बलाई खामा से मैत्री करके यहाँ ब्रिटिश प्रभाव फिर स्थापित कर लिया। पर खारशाही के लौटने से आशा है कि तिब्बत फिर पूर्ण स्वाधीन हो जाये और यहाँ विदेशियों के हथकड़े न चलने पायें।



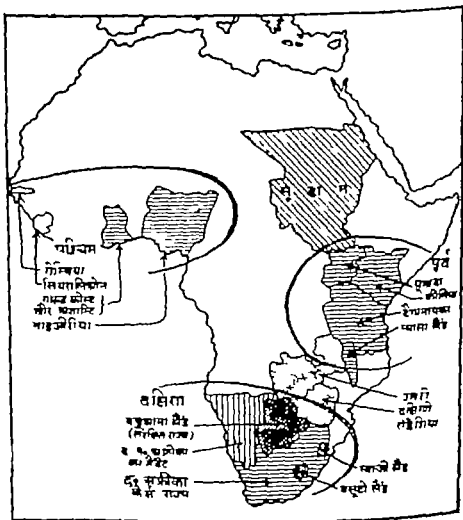
५७-अफ्रीका के स्वाधीन राज्य

पोरुपीय अन्वेषण के साथ साथ अफ्रीका का बंटना भी आरम्भ हो गया। उन्नीसवीं सदी के अन्त में तीन शक्तियों को प्रमुख सारे अफ्रीका पर पोरुपीय लोगों का अधिकार हो गया। इन तीन भागों में यूरीसीनिया को १८१५ में हाल ही में इटली ने हथप लिया। स्वयं नहर सुडान के बाद मिस्र देश पर मिटोन की नजर पड़ी। १८१७ ई० में बर्मी बर्माई बिड़म पर टर्की के नाम मात्र के अधिकार को प्रकटा कर के मिटोन ने मिस्र देश को सुडान सुखा अंग्रेजी राज्य में मिला लिया। यही बर्माई के बाद मिस्र देश को नाम मात्र की स्वाधीनता दे दी गई। सुडान पर ब्रिटिश अधिकार रहा। केनाडा जोन (नहर के देश) केरा काहिरा और सिकन्दरिया में अंग्रेजी फौज बनी रही। मिस्र देश की विदेशी नीति मिटोन दिवों के अनुसार निर्धारित होती रही। १८१९ की सन्धि के अनुसार मिस्र देश की स्थिति में काफ़ी सुधार हुआ।



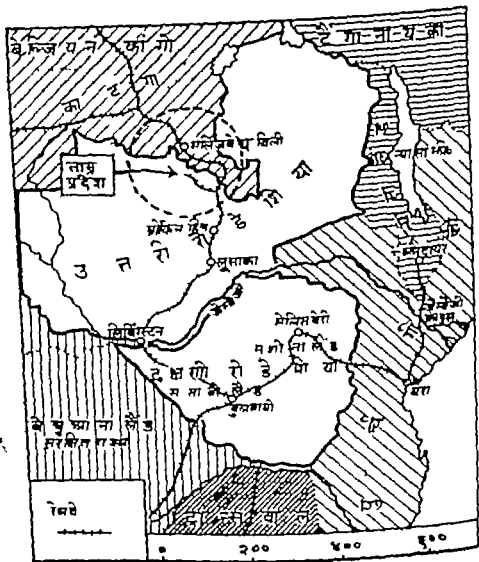
५६—अफ्रीका में ब्रिटिश साम्राज्य

अफ्रीका में ब्रिटिश प्रदेश एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले हुये हैं। नाइजीरिया और पश्चिमी तट के प्रदेशों में कोई अग्रोष घसन के लिये नहीं गया है। यहां की जलवायु उनके लिये अत्यन्त नम और गरम है। पर यहां की उपज से लाभ बठान के लिये यहाँ अग्रोषी शासन है। पूर्वी अफ्रीका में युगांडा, कीनिया र्दगातीका और न्यासालैंड शामिल हैं। यहाँ ऊँचे भागों की जलवायु अच्छी है। यहाँ अग्रोष लोग घसन लगे हैं। इसलिये यहाँ घसे हुए मूल निवासियों और हिन्दुस्तानियों की समस्या उठ खड़ी हुई है। दक्षिण अफ्रीका में गोरे उपनिवेश अधिक संख्या में घसे हैं। पर इन दोनों की संख्या यहाँ घसे हुए मूल निवासियों और हिन्दुस्तानियों के मुकाबले में कुछ भी नहीं है। इसी से गोरों के हाथ में शासन रखने के लिये इच्छियों और हिन्दुस्तानियों को शासन प्रथम में समान अधिकार नहीं दिया है। पूर्वी अफ्रीका और दक्षिणी अफ्रीका के बीच में भीतर की ओर रोडेशिया स्थित है। उत्तर की ओर सूडान का बड़ा प्रदेश है।



५६—अफ्रीका में ब्रिटिश साम्राज्य

अफ्रीका में ब्रिटिश प्रदेश एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले हुये हैं। नाइजीरिया और पश्चिमी तट के प्रदेशों में कोई अप्रमत्त बसने के लिये नहीं गया है। यहां की जलवायु उनके लिये अत्यन्त नम और गरम है। पर यहां की उपज से लाभ उठाने के लिये यहाँ अप्रमत्त शासन है। पूर्वी अफ्रीका में युगांडा, कीनिया टंगानिका और न्यासाँड शामिल हैं। यहाँ ऊँचे भागों की जलवायु अच्छी है। यहीं अप्रमत्त लोग बसने लगे हैं। इमलिय यहाँ वसे हुए मूल निवासियों और हिन्दुस्तानियों की समस्या उठ खड़ी हुई है। दक्षिण अफ्रीका में गोरे उपनिवेश अधिक सख्या में बसे हैं। पर इन दोनों की सख्या यहाँ वसे हुए मूल निवासियों और हिन्दुस्तानियों के मुकाबले में कुछ भी नहीं है। इसी स गोरों के हाथ में शासन रखने के लिये दक्षियों और हिन्दुस्तानियों को शासन प्रबन्ध में ममान अधिकार नहीं दिया है। पूर्वी अफ्रीका और दक्षिणी अफ्रीका के बीच में मीटर की ओर गेडेशिया स्थित है। उत्तर की ओर सूडान का बड़ा प्रदेश है।

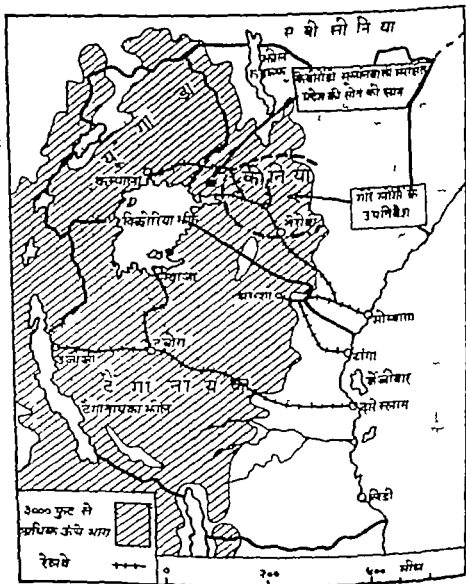


६०—रोडेशिया

१९०३-०४ ई० में ब्रिटिश गवर्नमेंट ने माउय अप्रोफन कार्टेज कंपनी से रोडेशिया का अधिकार ले लिया। इसी समय दक्षिणी रोडेशिया को कुछ हद तक स्वराज्य मिल गया। इस समय उत्तरी रोडेशिया का कोई आर्थिक महत्व न था। इसके बाद वहाँ वेल्जियन कार्टेज का पास रांबे की विशाल खानों का पता लगा। इससे गोरे पूँजीपतियों को अपार लाभ होगा। साथ ही यहाँ के मूल निवासियों के हितों को खतरा है। इसके दक्षिण की ओर दक्षिण अफ्रीका है जहाँ गोरों के हितों को सर्व प्रधानता दी जाती है। उत्तरी रोडेशिया के कुछ गोरे रपनिवेशक ब्रिटिश पार्लियामेंट के नियन्त्रण से बचने के लिये दक्षिणी रोडेशिया से मिलाना चाहते हैं।

६१—दक्षिणी अफ्रीका के संरक्षित राज्य

१९०९ ई० में जब युनियन आफ साउथ अफ्रीका (दक्षिण अफ्रीका स्वराज्य) बना तब तीनों ब्रिटिश संरक्षित राज्य ब्रिटिश सरकार के अधिकार में ही बने रहे । यह तीन संरक्षित राज्य थे वेसुआनालैंड (ब्रिटिश वेसुआनालैंड दूसरा है, यह कपकलोनो का एक भाग है) बसूटोलैंड और स्वाजीलैंड । इन में स्वाजीलैंड सबसे बड़ा है और युनियन की उत्तरी सीमा पर स्थित है । स्वाजीलैंड और बसूटोलैंड छोटे भाग हैं और युनियन के ही भीतर स्थित हैं । युनियन के गोरे लोग इन तीनों प्रदेशों को अपने ही अधिकार में लेना चाहते हैं । लेकिन मूल निवासी मीथे ब्रिटिश शासन को अधिक प्रसन्न करते हैं । ब्रिटिश सरकार ने इन प्रदेशों को एक दम युनियन को सौंप देने से इनकार किया । लेकिन इन प्रदेशों के आर्थिक विकास को युनियन सरकार के हाथ में दे दिया ।

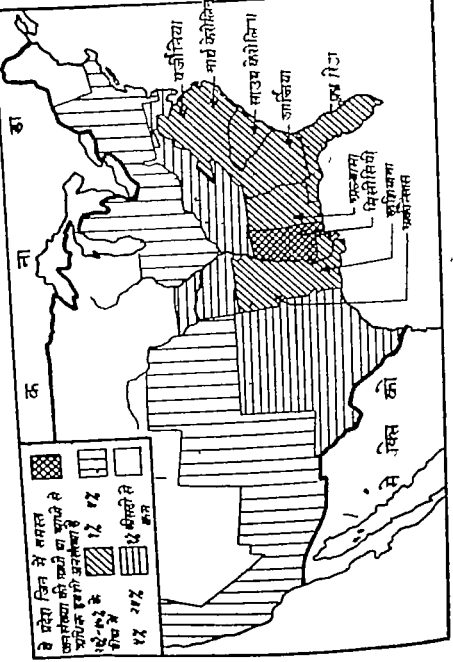


६२—ब्रिटिश ईस्ट अफ्रीका

टैंगानीका टेरीटरा का शासन ब्रिटिश सरकार ने मॅडेट की हैसियत से अपने हाथ में लिया। इस प्रदेश का शासन और प्रदेशों से अच्छा है। जब से यूगांडा रेलवे बनी और यूगांडा को मोम्बासा के तट से जोड़ दिया गया तब से कीनिया के ऊँचे भाग गोरे लोगों को माने लगे। ऊँचे भाग ही कीनिया में रहने योग्य हैं। नीचे भागों में मलेरिया फैलता है। फिर क्या था यहाँ के असली रहने वाले इन अच्छे स्थानों से निकाल दिये गये और नियत (रिजर्व) स्थानों में रखे गये। अच्छे स्थान गोरों के लिये खाली कर दिये गये। मूल निवासियों को जो स्थान दिये गये वे बहुत संकुचित थे। इसलिये उनसे ब्रिटिश सरकार ने पादा किया कि आगे किसी हालत में भी इनके स्थानों पर वसूल न किया जायगा। लेकिन वैवयोग से विक्टोरिया झील के पास मूल निवासियों के नियत (रिजर्व) स्थान कावीरोंडो में सतने का पता लगा। पादा फौरन वापस दिया गया। कई वर्गमील जमीन मूल निवासियों से छीन कर फिर गोरे लोगों को दे दी गई। गोरे शासकों की इस तरह की पादाखिलाफी का मूल निवासियों पर गहरा असर पड़ रहा है।

६३—लाइबेरिया

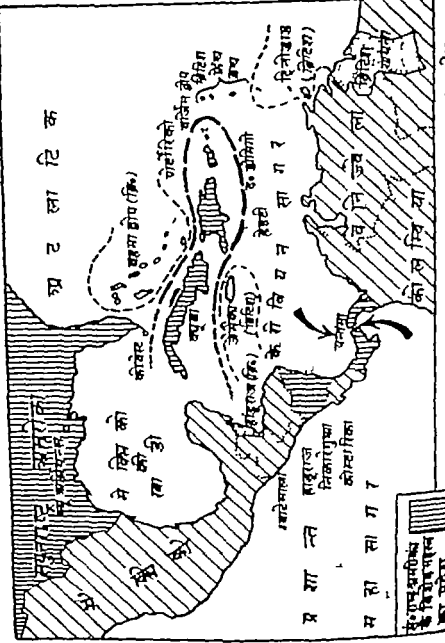
१९१६ ई० में अमरीका के आग्रह इच्छियों का बसाने के लिये लाइबेरिया उपनिवेश का आरम्भ हुआ। १८४० ई० में हबशी उपनिवेशकों ने स्वाधीनता की घोषणा की। पर सम्य इच्छियों की सख्या २०००० से अधिक नहीं है। इनमें १२००० अमरीका से कौट कर आये हुए हैं। इनका प्रभाव प्रायः तटीय प्रदेश तक ही सीमित है। भीतरी भागों में वे अधिक नहीं घुस पाये हैं। १९१८ ई० में संयुक्त-राष्ट्र अमरीका ने लाइबेरिया को अर्थात् दिया। इससे अमरीका का आर्थिक सहायकार यहाँ आ गया। अतःकल लाइबेरिया की आर्थिक सम्पत्ति एक प्रकार से अमरीका की फायर स्थान एबर कम्पनी के हाथ रहन है। एबर के वगीचों की दशा अधिक खराब गई। उसी की जांच पड़ताल करने के लिये राष्ट्र संघ ने एक कमेटी नियत की।



६४—संयुक्त राष्ट्र अमरीका में ह्वशियों की समस्या

अब स लगभग बार मी वर्ष पहले योरुप के गोरे लोग अमरीका म आये । इनकी मन्या तेजी से बढ़ी । लगभग डेढ़ सौ वर्ष पहले संयुक्त राष्ट्र अमरीका एक स्वतन्त्र राज्य बन गया । कुछ गोरे लोग दक्षिणी भाग म खेती के काम में लगे । गरमी में मेहनत से घपने के लिये उन्होंने दूपारों दयशी गुलाम मोल लिये । आज स लगभग ८० वर्ष पहले गुलामी को प्रथा से दूर हो गई लकिन दयशी बने रह । इस समय संयुक्त राष्ट्र अमरीका को लगभग दस करोड़ आबादी में मया करोड़ दयशी हैं, जो मारी आबादी के दम कीमती से अधिक हैं । दक्षिणी रियासतों में दयशी लोग सख्या म गोरी आबादी से फर्हीं कुछ अधिक फर्हीं वे उनके बराबर हैं । मिसीमिपी रियासत में वे (दयशी) इस समय भी अधिक (५५ फी सदा) हैं । साउथ करोलिया और कुछ दूसरी रियासतों में दयशी लोग पन्द्रह वर्ष पहले अधिक सख्या में थे । आजकल वे घट गये हैं । जहाँ दयशी लोग अधिक सख्या में हैं वहाँ उनके साथ घुरा बर्ताव किया जाता है । वे गोरों के गिरजाघरों, नाटकघरों और भोजनालय में नहीं जा सकते हैं । जो हाल नाजी जर्मनी में पहूदियों का है उससे कम घुरा हाल दयशियों का संयुक्त राष्ट्र अमरीका में नहीं है ।

क टि ला ट प्र



मे किस को
रबा की डी

कोवेस्ट
बृहमा गोप (कि.)

पोर्तेरिको
वर्तिसम डीप
किरिग
अंध
डच

हेडटी
क रो वि य न सा ग र

रिनीडाड
ड (ब्रिटिस)

ला
जव ने डच
को ल म्वि या

प्र शा न्त
म हा सा ग र

भारतेमात्मा
सद्वराज
निकारगुसा
कोस्वार्तिका

सं. ग. प्र. म. टि. क.
के. वि. प्र. म. टि. क.
प्र. म. टि. क.

६५-संयुक्त राष्ट्र अमरीका और केरिवियन सागर

१८९८ को स्पेन की लड़ाई के बाद संयुक्त राष्ट्र अमरीका को सरकार केरिवियन सागर के द्वीपों में तेजी से बढ़ने लगी। स्पैनिश लड़ाई के बाद पोटरिको का द्वीप मिला लिया गया। फ्यूवा प्राय संयुक्त राष्ट्र अमरीका का संरक्षित द्वीप बन गया। पनामा के नये प्रजातंत्र में संयुक्त राष्ट्र अमरीका की देख-भाल होने लगी। १९०३ में फेनाल का प्रदेश संयुक्त राष्ट्र को सदा के लिये मिला गया। १९१५ के हस्तक्षेप के बाद हेइटी की आर्थिक सम्पत्ति पर संयुक्त राष्ट्र अमरीका की निगरानी होने लगी। सैंटोमिगो द्वीप भी उनके संरक्षण में आ गया। १९१६ में निकारेगुआ में इतने अधिकार मिल गये कि वहाँ संयुक्त राष्ट्र का ही नियंत्रण हो गया। १९१७ ई० में संयुक्त राष्ट्र ने पर्थिन द्वीप डेन्मार्क से मोल ले लिये। संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रभाव क्षेत्र के उत्तर (पहमा) और दक्षिण (अर्मेका) में ब्रिटिश साम्राज्य के अधिकार (द्वीप) हैं।

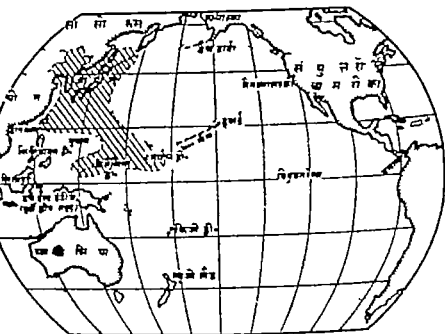
६६—क्यूबा

प्लैट सुधार के अनुसार (जो १९२४ में रद्द कर दिया गया) संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने स्पैनिश अमरीकन लड़ाई के बाद क्यूबा पर अपना संरक्षण घोषित कर दिया। हाल में संयुक्त राष्ट्र अमरीका के प्रमुख के विरुद्ध क्यूबा में राष्ट्रीय विद्रोह उठ खड़ा हुआ, पर क्यूबा की आर्थिक शिकायतें और भी गहरी हैं। क्यूबा की प्रधान सम्पत्ति गन्ने की शक्कर है। लेकिन अमरीकन सरकार अपने यहाँ की चुकन्दर की शक्कर को प्रोत्साहन देने के लिये क्यूबा के गन्ने की शक्कर को भारी छु गी लगाकर कम कर रही है। इसमें क्यूबा का आर्थिक जीवन ही घोर संकट में पड़ रहा है।

६७—पनामा और निकारेगुआ

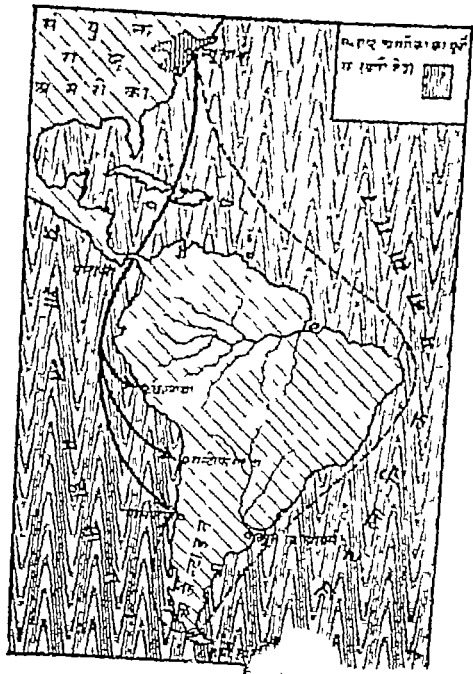
स्पैनिश अमरीकन लड़ाई से यह स्पष्ट हो गया कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपना प्रभुत्व स्थिर रखने के लिये या तो दोनों (अटलांटिक और प्रशान्त) महासागरों के तटों पर जहाजी सेना रखे अथवा दोनों तटों को मिलाने के लिये यह एक नहर खोले। अन्त में दोनों महासागरों को जोड़ने के लिये एक नहर की योजना तय की गई। पनामा पहले कोलम्बिया प्रजातन्त्र का अंग था। कोलम्बिया नहर की ज़मीन का दाम बहुत अधिक मागता था। १९०३ ई० में पनामा ने अपनी स्वाधीनता घोषित कर दी। दस दिन बाद संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने इसे स्वीकार कर लिया। पनामा की नई सरकार ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका को नहर बनाने के लिये ० मील चौड़ी पेट्री अटलांटिक तट से प्रशान्त महासागर के तट तक सड़क के लिये दे दी।

१९१६ से पनामा नहर में जहाजों की इतनी भीड़ होने लगी कि दूसरी नहर की आवश्यकता प्रतीत हुई। नहर मार्ग और दोनों तटों पर जहाजी अड्डा बनाने के लिये संयुक्त राष्ट्र ने निकारेगुआ में ११ फ़ीसदी भू-भाग खरीदा। लेकिन निकारेगुआ की नहर बनाने में ७० करोड़ डालर खर्च होंगे। पनामा नहर में नया माल १४ फ़ीसदी रुपये में ही बन जायेगा। इसलिये निकारेगुआ की नहर बनाने का काम अभी शुरू नहीं हुआ है।



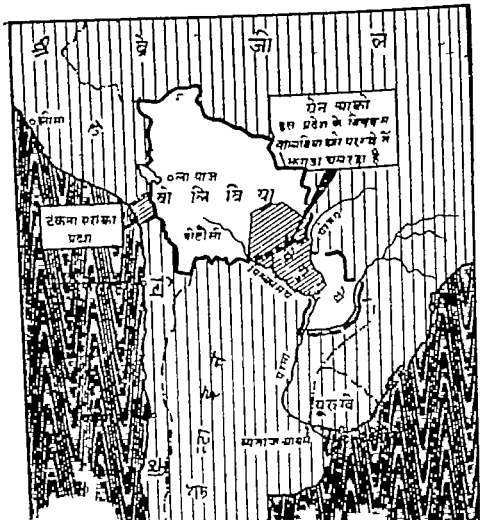
६८—प्रशान्त महासागर में जातियों का संघर्ष

१८६८ ई० में संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने इषाई द्वीप का (जो प्रशान्त महासागर के लम्बे जल-मार्ग में अधविष्य स्थित है) मिला लिया । फिर उसने कुछ महोर्मों के बाद फिलीपायन द्वीप और गुयाम द्वीप ले लिये । इसमें संयुक्त राष्ट्र अमरीका प्रशान्त महासागर की एक शक्ति बन गई । यही लक्ष्य है कि बाद प्रशान्त महासागर के जा द्वीप विपुलन रेखा के उत्तर में स्थित थे य लीग की शर से जापान को मिला गया । इसमें जापानी अधिकार संयुक्त राष्ट्र अमरीका के उस जलमार्ग का काटन लगा जा पनामा नहर और फिलीपायन द्वीपों के बीच में स्थित है । जहाजी सेमिकों का अनुमान है कि इषाई द्वीप से १००० मील से अधिक भाग संयुक्त राष्ट्र अमरीका तक पहुँक नहीं सकेता है । संयुक्त राष्ट्र में अमरीका नाम मात्र का फिलीपायन द्वीप के स्वाधीनता भल ही मिला जाय लेकिन १९४५ ई० के पहले अमरीका अपना नियन्त्रण खीला ही कर सकता । अगर अमरीका फिलीपायन द्वीप का पूरा स्वाधीनता शर ता उसे जापान के हाथ में लगे जाने का डर है । जापान की बर्नः दुई शक्ति से ब्रिषि साम्राज्य के हाँगकंग और सिंगापुर का भी डर है । इसा तरह डब कागों के पूर्वी द्वीप समूह का लेल भी जापान के बड़े काम का है ।



६६—दक्षिणी अमरीका में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का साम्राज्यवाद

संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अब से केरिबियन सागर की ओर बढ़ना शुरू किया है तब से दक्षिणी अमरीका की रियासतों सन् १९६० की दृष्टि से खल रही हैं। पनामा नहर ने संयुक्त राष्ट्र अमरीका के पूर्वी करमारी प्रदेश को प्रशांत महासागर के प्रजातन्त्र राष्ट्रों को सैकड़ों मील नज़दीक कर दिया है। मनरो डॉक्ट्रिन (सिद्धान्त) के अनुसार पहले संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने योस्य क राज्यों की दक्षिणी अमरीका में हस्तक्षेप करने से रोक दिया था। हाज़ में इस डॉक्ट्रिन के अनुसार दक्षिणी अमरीका की जटपट में हस्तक्षेप करने का एक मात्र अधिकार अपने ही ऊपर ख़ास है। दक्षिणी अमरीका में संयुक्त राष्ट्र की सभ से कई आर्थिक सहाई ब्रिटेन क साथ है। अर्जेण्टाइन में यह आर्थिक सहाई और भी अधिक विकट है। यहाँ सब से अधिक व्यापारिक उन्नति हुई है। १९३३ की सन्धि से अर्जेण्टाइन ने ब्रिटेन का कई व्यापारिक सुविधायें कर दी हैं। लेकिन सन् १९३३ से १९९० तक ब्रिटेन का निर्यात (ब्रिटेन से यहाँ आने वाला माल) २२ फ़ीसदी से घटकर १६ फ़ीसदी हो गया। इसी बीच में संयुक्त राष्ट्र अमरीका का निर्यात यहाँ २४ फ़ीसदी से बढ़ कर ३८ फ़ीसदी हो गया।



येन स्याको
इत प्रदेश के विषयमे
वास्तविकता को परिच्छे में
अक्षांश समरता है

टंकना पराका
प्रदा

ना पास
सो लि वि या

बोटीमो

पाटना

मुजफ्फरपुर

पामा

पुसुव

मसाम बास

सिमाम

बि

ह

जा

ल

पु

सि

र

र

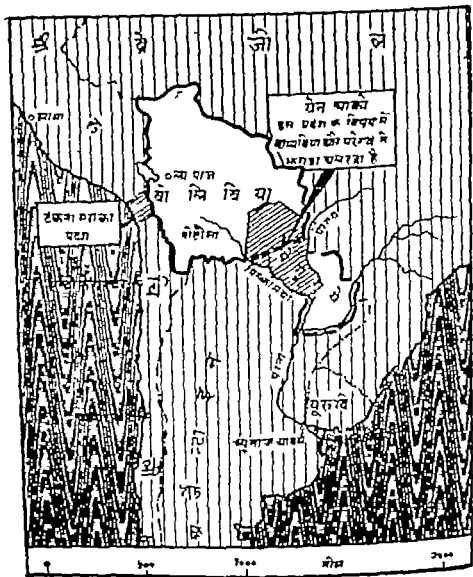
र

र

७०—बोलिविया और पेरुग्वे की लड़ाई

बोलिविया और पेरुग्वे दक्षिणी अमरीका के दो ऐसे भीतरी प्रजातन्त्र राष्ट्र हैं जो किसी समुद्र तट को नहीं छूते हैं। १९३० में इन दोनों राष्ट्रों के बीच में लड़ाई शुरू हुई। इसका अन्त १९३५ के जून की सैनिक सन्धि से हुआ। यह लड़ाई ब्रेनचाफो प्रदेश के लिये हुई थी। पण्डितजी को उच्च पर्वत भेरी ने बोलिविया को प्रशान्त महासागर तट तक पहुँचने का मार्ग सुरक्षित बना दिया है। बोलिविया बाल परना और पेरुग्वे नदियों द्वारा अटलांटिक महासागर तक पहुँचने के लिये सुगम जलमार्ग चाहते हैं। पेरुग्वे वेग वाले बोलिविया का कुछ प्रदेश चाहते हैं। जब से ब्रेनचाफो में मिट्टी का तेल मिला है तब से दोनों देशवाले इसको चाहने लगे हैं। लड़ाई में जिन देशों के गोला बारूद और दूसरे सामान की बिक्री होती है वे चाहते थे कि उनका सामान बिकता रहे। इसलिये और भी यह लड़ाई इतने अधिक समय तक जारी रही।

एक समय बोलिविया ने टेफनापरिका प्रदेश पर अपना अधिकार प्रगट किया। इससे समुद्र तट तक उनकी पहुँच हो जाती। लेकिन १९०९ के समझौते से यह टेफ नापरिका प्रदेशा पीरू और चिली ने आपस में बाँट लिया।



७१—बोलिविया

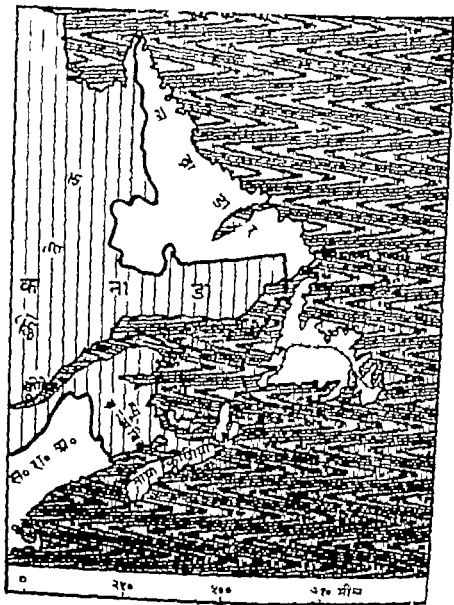
खनिज सम्पत्ति की दृष्टि में नई दुनिया में संयुक्त राष्ट्र अमरीका और मेक्सिको के बाद तीसरा नम्बर बोलिविया का ही है। दुनिया भर में जिसनी तीन निकलती है उसकी एक चौथाई बोलिविया में होती है। चीन के बाद दुनिया की उत्पत्ति के लिये संसार में दूसरा स्थान बोलिविया का ही है। यहां चाँदी और सोना भी काफी निकलता है। बाहर भेजने के लिये बोलिविया की यह सय खनिज सम्पत्ति शिली के परिका और एटोफेगस्टा बन्दरगाहों को भेजी जाती है। दूसरा मार्ग पेरुवे नदी के द्वारा अटलांटिक तट के लिये हो सकता है। इसीलिये पेरुवे घेरा से लड़ाई छिड़ी। बोलिविया में मूलनिवासी शिष्टयन लोगों की अधिकता है। उनकी बड़ी विकराल शरीर है। बोलिविया में एक ओर खनिज सम्पत्ति की अधिकता है दूसरी ओर शरीर लेकिन हट्टे फट्टे मजदूरों से पूंजीपति लोग पूरा लाभ उठाने की धुन में हैं।

७१—बोलिविया

स्वनिज सम्पत्ति की दृष्टि से नई दुनिया में सयुक्त राष्ट्र अमेरीका और मेक्सिको के बाद तीसरा नम्बर बोलिविया का ही है। दुनिया भर में जितनी टॉन निकलती हैं उमकी एक चौथाई बोलिविया में होती है। चीन के बाद सुग्मे की उत्पत्ति के लिये ससार में दूसरा स्थान बोलिविया का ही है। यहाँ चाँदी और सीसा भी काफी निकलता है। घाहर भेजने के लिये बोलिविया की यह सय स्वनिज सम्पत्ति चिली के परिका और एखोफेगस्ता बन्दरगाहों को भेजी जाती है। दूसरा मार्ग पेरुवे नदी के द्वारा अटलांटिक तट के लिये हो सकता है। इसीलिये पेरुवे देश से लड़ाई छिड़ी। बोलिविया में मूलनिवासी इन्डियन लोगों की अधिकता है। उनकी बड़ी बिकराल शरीरी है। बोलिविया में एक ओर स्वनिज सम्पत्ति की अधिकता है दूसरी ओर शरीर लेकिन हट्टे कट्टे मजदूरों से पू जीपति लोग पूरा लाभ उठाने की धुन में हैं।

७२-दक्षिणी अमरीका की जातियाँ

गायना में योरुपोय पूँजीपति और शामकों ने यहाँ की आर्थिक सम्पत्ति से लाभ उठाने के लिये अपने उपनिवेश बहुत पहले से बनाये हैं। यहाँ मूलनिवासियों के साथ चीनी, हिन्दुस्तानी और दृश्यशी लोग भी काफी तादाद में पहुँच चुके हैं। इनके अतिरिक्त कोलम्बिया, यूक्रेन, पीरू और ब्राज़िलिया के चार स्थानिक प्रधान प्रजातन्त्र राष्ट्रों में भी मूलनिवासियों की अधिकता है। वे बहुत सस्ती मजदूरी पर काम करने के लिये तयार हो जाते हैं। वेनिज्वेला और गायना में दृश्यशी और मुलाटो वर्णमकर लोगों की अधिकता है। ब्रेज़िल में मुलाटो के अतिरिक्त गोरे और मूलनिवासी इस्त्रियन लोगों की जन-संख्या प्रायः बराबर है। शीतोष्ण प्रदेश के चार प्रजातन्त्र राष्ट्रों (चिली, अर्जेण्टाइना, यूरुग्वे और पेरुग्वे) में मूलनिवासी घटते घटते अल्पसंख्या में रह गये हैं। गोरो की प्रधानता हो गई है।



७३—न्यूफाउंडलैंड

न्यूफाउंडलैंड का शासन प्रथम कनाडा से अलग है। न्यूफाउंड से ही पब्लिस का लम्बाहार प्रदर्श मिला हुआ है। १९०७ ई० में प्रिन्सिपल काउंसिल ने कनाडा के वकील प्रान्त और लम्बाहार की सीमा निर्धारित की थी। लम्बाहार में केवल ४२६४ मनुष्य रहते हैं। न्यूफाउंडलैंड की जनसंख्या लगभग २ लाख है। प्रधान सम्पत्ति मछली और लकड़ी है, लेकिन यहाँ की सरकार घाटे से चलती थी। न्यूफाउंडलैंड के विधालिये-पन की जीव करने के लिये १९३३ के नवम्बर मास में एक रॉयल कमीशन बैठा। इस कमीशन ने सिफारिश की है कि न्यूफाउंडलैंड से प्रतिनिधि संस्थायें उठा ली जावें और इसका शासन-भार ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त किये गये एक कमीशन को सौंप दिया जावे।

